।।श्री गणेशाय नमः।।

।।श्री बाबा गंगाराम देवाय नमः।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दनाय नमः।।

विष्णुअवतारी – झुंझुनूंवाले
श्री बाबा गंगाराम के भजनों का
अनमोल संग्रह

श्री बाबा गंगाराम ज्योति दर्शन

खण्ड – २
भजन १०१ से २१० तक

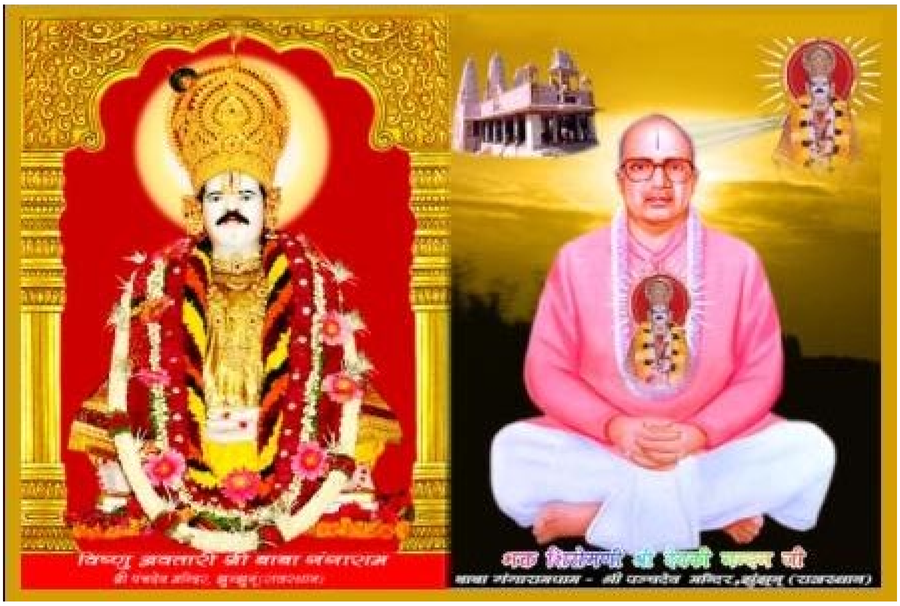

www.babagangaram.com

ॐ जय हो पंचदेव दरबार की ॐ जय हो बाबा गंगाराम की ॐ जय हो झुंझुनूंधाम की ॐ

ॐ जय हो पंचदेव दरबार की ॐ जय हो बाबा गंगाराम की ॐ जय हो झुंझुनूंधाम की ॐ

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - ऐ मेरे दिल नादान ...)

माँ गायत्रीजी ने जो ज्योति जगाई है,
उस ज्योत ने हम सबको नई राह दिखाई है ।।टेर।।

माँ देवकीनन्दन के आदर्शों की छाया है,
मां ने उस साधक का सत्पथ अपनाया है,
माँ भक्त शिरोमणि की शिवशक्ति कहाई है,
माँ गायत्रीजी ने...

माँ सत्यसाधिका है, आराध्य मनाती है,
माँ विष्णु अवतारी, का मंगल गाती है,
माँ गंगा सी पावन, गुण गंगा बहाई है,
माँ गायत्रीजी ने...

माँ ने इस धरती पर, जो जोग जगाया है,
सब भक्तों ने मिलकर, वो पथ अपनाया है,
माँ जैसी जोगन तो कोई और न आई है,
माँ गायत्रीजी ने...

माँ देवकीनन्दन का, प्रतिबिम्ब हमें देना,
जब-जब तुम्हें याद करें, चरणों में ले लेना,
'राजेन्द्र' को तेरे सिवा, माँ कौन सहाई है,
माँ गायत्रीजी ने...

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - उड़े जब-जब जुल्फे तेरी ...)

चलो झुंझनूं नगरिया चालें - 2
कि बाबा गंगाराम बसते - 2 वहां भगतों ।

ओ ··· चलो पंचदेव के मन्दिर - 2
कि झोली गंगाराम भरते, वहां भगतों ।।1।।

ओ ··· गंगा में डुबकी लगालो - 2
कि भगतों के पाप कटते, वहां भगतों ।।2।।

ओ ··· बहे राम की निर्मल धारा - 2
कि गंगाजी से राम मिलते, वहां भगतों ।।3।।

ओ ··· जब गंगादशहरा आये - 2
कि मेले हर बार लगते, वहां भगतों ।।4।।

ओ ··· कहे 'हर्ष' उमरिया बीते - 2
कि बाबाजी का नाम जपते, वहां भगतों ।।5।।

जहां देवालय श्री गंगाराम का, मन को बड़ा लुभाये।
जहां सिंहासन श्री पंचदेव का, भक्तों को न्याय चुकाये।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - कभी राम बनके कभी श्याम बनके ...)

गंगाराम रसिया, मेरे मन बसिया,
झूला झूलो बाबाजी मेरे अंगना।

क्षीर सागर से इत्तर मंगाया, सारी सृष्टि में आनन्द छाया,
झिर-मिर बरसे, मेरा मन तरसे, झूला झूलो ... ।।1।।

आज दशमी का उत्सव है प्यारा, झूलनोत्सव मनाते तुम्हारा,
नया - नया अभियान, गायें सब गुणगान, झूला झूलो ... ।।2।।

झूला फूलों से हमने सजाया, जिसमें चन्दन का पाटा लगाया,
बान्धी रेशम की डोर, झूलो-झूलो चितचोर, झूला झूलो ... ।।3।।

छटा इन्द्रधनुष की छाई, मेघ गरजे तो गावे बधाई,
छाई घटा घनघोर, मोर बोले चहुं ओर, झूला झूलो ... ।।4।।

आया 'राजेन्द्र' झूला झुलाने, गंगारामजी की महिमा गाने,
तेरे चरणों के दास, करे यही अरदास, झूला झूलो... ।।5।।

गंगा सी पावनता इनमें, मर्यादा श्री राम की।
प्रेम भाव से सब मिल बोलो, जय श्री गंगाराम की।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - दुल्हे का सेहरा ...)

झुंझनूं में आना सुहाना लगाता है,
बाबाजी से प्रेम पुराना लगता है।
ढूंढ रहा था जनम-जनम से दिल जिसको,
शायद ये तो वही ठिकाना लगता है।।

बाबा के इक बार जो भी द्वार पे आता,
प्रेम बन्धन जीवन भर फिर टूट ना पाता,
दीवाना इसका जमाना लगता है ।।1।।

लाज भक्तों की बचाते देवकीनन्दन,
चिन्ता करे क्यूं बावरे, बाबा की आ शरण,
शरणागत को ये पहचाना लगता है ।।2।।

है नहीं 'सोनी' अकेला बाबा साथ है,
'मारवाल' डर क्या जब हाथों में हाथ है,
नामुमकिन अब हाथ छुड़ाना लगता है ।।3।।

बाबा गंगाराम के जैसा, कहीं न देखा दानी।
जिनके आशीर्वाद से तर गये, जग में लाखों प्राणी।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – आज मेरे यार की शादी है ...)

आज बाबा का कीर्त्तन है – 2
हो··· प्यारा है दरबार जहाँ खिल जाये तन-मन है ।।

दरश विष्णु अवतारी, है ये जग पालनहारी,
छवि लागे अति प्यारी, गाये महिमा नर-नारी,
हो··· बाबा गंगाराम बसे, भक्तों के चितवन है।
आज बाबा ... ।।1।।

देवकीनन्दन प्यारा, लगे है सबसे न्यारा,
चिता से हाथ उठाया, भक्त मन भाया न्यारा,
हो··· पंचदेव दरबार बरसता, अमृत रस धन है।
आज बाबा ... ।।2।।

जो भी इस चौखट आये, महर बाबा की पाये,
समर्पित जो हो जाए, झोलियाँ भर ले जाये,
हो··· राजा रंक सभी का ये, नहीं रखता अन-बन है।
आज बाबा ... ।।3।।

लगाओ जयकारा यूँ, गगन गूँजे सारा यूँ,
दिलों में उमंग जगी यूँ, तेरी सेवा पाऊँ यूँ,
हो··· 'मुन्ना' द्वार तिहारे गाये, जीवन धन-धन है।
आज बाबा ... ।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – कान्हा रे कान्हा ...)

गंगाराम का जनम दिन आया रे आया,
आया रे आया, आया रे आया,
झुंझनूंवाले का जनम दिन – आया रे आया।

झुंझनूं धाम में बाबाजी का शुभ अवतार हुआ है,
सारे जग में खुशियां छाई मंगलाचार हुआ है,
रात गया अब दिन, आया रे आया ।।1।।

खुश होकर के सब भक्तों ने घर को आज सजाया,
भाग्य जगा कलियुग का है विष्णु अवतारी आया,
बनके बाबा गंगाराम, आया रे आया ।।2।।

पंचदेव दरबार में देखो खुशियाँ आज है छाई,
श्रावण शुक्ला दशमी पावन, घर-घर बंटे बधाई,
नाचे भक्त 'कुमार' आया रे आया ।।3।।

गंगा तारणहार कहाए, मर्यादा हमें राम सिखाए।
दोनों कारज सिद्ध करन को, गंगाराम बन भगवन आए।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – चांद सी मेहबूबा हो ...)

बाबा गंगाराम की महिमा, सच्चे मन से गाते हैं,
विष्णु जी अवतार लिये है, सारे जग को बताते हैं।

झुंझनूं में इनका जन्म हुआ, जग तारण को ये आए हैं,
मां लक्ष्मी झूथाराम के घर, मानव तन प्रभुजी पाए हैं – 2
सत्य का पथ अपनाए बाबा, भक्तों को हम बताते हैं ।।1।।

सफदरगंज में वास किया, कल्याणी तट पर तप करते,
भक्तों को राह दिखाते प्रभु, दुखियों का दुख बाबा हरते – 2
इनकी पूजा जो भी करते, वो सारा सुख पाते हैं ।।2।।

बाबा की आज्ञा सिर धरके, देवकी ने त्यागी थी माया,
गंगा दशमी के शुभ दिन तब, बाबा का मन्दिर बनवाया – 2
भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन, जग को ज्ञान सिखाते हैं ।।3।।

पंचदेव मन्दिर में बाबा गंगाराम विराजे है।
शिव परिवार व दुर्गा लक्ष्मी और बजरंगी साजे है।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – काजलियो ...)

उत्सव बाबाजी को आयो, म्हारो मनड़ो है हर्षायो – 2
चाल झुंझनूं नगरिया चालस्यां, हो, हो··· चाल।

जाके बाबाजी ने आज रिझावो जी – रिझावो जी,
पाछे बाबा का आशिष, पावोजी – पावोजी,
ओ··· कीर्त्तन में झूम-झूम नाचां गावांजी, आपा नाचां गावांजी,
ढोलक ढपली चंग बजास्याँ, उत्सव मांही धूम मचास्यां ।।1।।

बठे मेलो गजब को लागेजी – लागेजी,
सारे भगतां ने लेल्यो, सागेजी – सागेजी,
ओ··· झुंझनूं में जाकै, सगला मौज मनावगांजी – 2
मीठा – मीठा भजन सुणास्याँ, म्हारे बाबा नै मनास्याँ ।।2।।

थारो 'सेवा समिति' गुण गावे जी – गावे जी,
आके चरणां में शीश, नवावेजी – नवावेजी,
ओ··· बाबा के चरण मांही धोक लगावां, हांजी धोक लगावां,
'हर्ष' नारायण अवतारी, करसी किरपा घणी भारी ।।3।।

बाबा गंगाराम का, आया शुभ त्योहार।
शत – शत अभिनन्दन करें, विष्णु के अवतार।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – तेरे होठों के दो फूल प्यारे – प्यारे ...)

मेरे बाबा गंगाराम झुंझनूंवाले, तुम हो कलियुग के देव निराले,
मुझे अपना दास, बना लेना – 2

सारी दुनिया के तुम रखवाले, मेरा जीवन भी अब तेरे हवाले,
मुझे अपनी शरण में, ले लेना – 2

झुंझनूं में धाम है तेरा, विष्णु के हो तुम अवतारी,
हे भाग्य विधाता मेरे, तुम हो भगतों के हितकारी,
सुनलो – 2 दीनानाथ, मेरे सिर पर रख दो हाथ,
मुझे अपने गले, लगा लेना – 2

तेरी मूरत प्यारी – 2, सूरज सा है तेज निराला,
सोहे अंग पे सुनहरी दुपटा, गल में वैजन्तीमाला,
प्यारा सजा तेरा सिंगार, बाबा जाऊं मैं बलिहार,
मुझे अपना दर्श, दिखा देना – 2

तेरे नाम में राम रमा है, और गंगा की पावन धारा,
श्रद्धा से जो भी सुमिरता, उसे भव से पार उतारा,
ऐसा पावन तेरा नाम, मैं भी गाऊं सुबहो शाम,
मेरी नैया पार, लगा देना – 2

मेरा मन है तेरा मन्दिर, बाबा इसमें करो तुम बसेरा,
हर पल हर क्षण नित बाबा, पाऊंगा मैं दरशन तेरा,
बाबा तुझ पर है विश्वास, मुझको मत करना निराश,
मेरा जीवन सफल, बना देना – 2

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – जरा सामने तो आओ छलिए ...)

दीन दुखियों के दाता राम हैं, जो कलियुग में गंगाराम है,
आओ मिलके करें हम आराधना, सारे जग में बड़ा ही नाम है।

झुंझनूं में पंचदेव का मन्दिर, बाबा का धाम कहाए है,
भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन, इसकी महिमा गाए है,
बड़ा पावन वो झुंझनूं धाम है, इन्हें शत – शत हमारा प्रणाम है,
आओ मिलके ... ।।1।।

शिव परिवार, मां दुर्गा, लक्ष्मी, बजरंगी संग रहते है,
भक्तजनों की विनती सुनते, सब संसारी कहते हैं,
झोली भरना ही इनका काम है, इन्हें शत–शत हमारा प्रणाम है,
आओ मिलके ... ।।2।।

गंगा नहाने राम भजन से, फल जो नर यहाँ पाता है,
गंगाराम भजो तो भक्तों, दोनों फल मिल जाता है,
सबकी रक्षा ही इनका काम है, इन्हें शत–शत हमारा प्रणाम है,
आओ मिलके ... ।।3।।

युगों–युगों के बाद धरा ने, एक फरिश्ता पाया है।
बाबा गंगाराम जहां में, अवतारी बन आया है।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – सावन की बरसे बदरिया मां की भीगी चुनरिया ...)

अमृत की बरसे बदरिया
चलो झुंझनूं नगरिया, झुंझनूं नगरिया...

पंचदेव मन्दिर जहां प्यारा, बाबा गंगाराम का द्वारा,
रखते जो सबकी खबरिया, चलो झुंझनूं ... ।।1।।

श्रद्धा भक्ति से जो आता, बिन मांगे वो सब कुछ पाता,
मेहर की रखते नजरिया, चलो झुंझनूं ... ।।2।।

भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन, हनुमत की भांति था जीवन,
सेवा में बीती उमरिया, चलो झुंझनूं ... ।।3।।

बाबा है विष्णु अवतारी, 'मारवाल–सोनी' बलिहारी,
भक्ति से निखरे चदरिया, चलो झुंझनूं ... ।।4।।

गंगाराम रस बहता निर्मल, ज्यों धारा जल गंगा है।
ब्रह्म शक्ति का संगम है ये, मिली राम संग गंगा है।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – तू ने मुझे बुलाया ...)

जिनकी लीला न्यारी हैं बाबा ये,
विष्णु के अवतारी हैं बाबा ये,
झुंझनूं के वासी ये, बड़े ही दानी ये,
है अन्तर्यामी ये...

बिगड़ी किस्मत पल में संवारे,
हो गए दर्शन भाग्य हमारे,
जो भी इनको दिल से पुकारे – 2
करते वारे न्यारे हैं बाबा ये,
लगते सबको प्यारे हैं बाबा ये ।।1।।

इनकी झोली दया से भरी है,
इनसा दयालु कोई नहीं है,
बन के ढाल वो आगे आते – 2
भक्तों की रक्षा करते हैं बाबा ये ।।2।।

हर एक मन की, ये ही जाने,
हम भी है इनके भक्त दिवाने,
बाबा ने 'संजीव' की सुन ली – 2
नित प्रति दर्श दिखाते हैं बाबा ये,
हमें सच्ची राह दिखाते हैं बाबा ये ।।3।।

धन्य झुंझनूं धाम में, पंचदेव दरबार।
प्रगटे गंगारामजी, विष्णु के अवतार।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - थाली भरकर लाई खीचड़ो ...)

पंचदेव मन्दिर झुंझनूं का श्री हरि का वरदान है,
गंगाराम जयन्ती भक्तों पावन पर्व महान है।

सावन शुक्ला दशमी के दिन देव धरा पर आए थे,
वैष्णव कुल में जन्में बाबा, गंगाराम कहाये थे,
लीलाधारी जन्में जिस दिन, दिन वो बड़ा महान है ।।1।।

त्रेता में श्री राम बने थे, द्वापर में घनश्याम बने,
भक्त परायण कलियुग में है, बाबा गंगाराम बने,
प्रगटे झुंझनूं की धरती पर, श्री विष्णु भगवान है।।2।।

रागरहित अनुरागी ने एक अंश हमें भी दान दिया,
भक्तशिरोमणि देवकीनन्दन, जैसा भक्त प्रदान किया,
अटल छत्र की छाया में, पलता ये सकल जहान है ।।3।।

जन्म दिवस का पावन अवसर सब मिलकर मंगल गावो,
महापर्व आया है भक्तों, पुष्प सभी मिल बरसाओ,
प्यार भरे शब्दों में करता, 'राजेन्दर' आह्वान है ।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - सावन का महिना ...)

बाबा तेरे जैसा, ना कोई दरबार।
दर्शन से ही तेरे, हो जाता है उद्धार ।।टेर।।

गंगा का पानी तन के, पापों को धोता,
रामजी का नाम मन के, तापों को खोता,
दोनों मिलकर करते, हैं भक्तों का उद्धार ।।1।।

गरीबों की दुनिया है, आबाद तुमसे,
देखी न जाती बिगड़ी, भक्तों की तुमसे,
बिन मांगे दे देते, और वो भी छप्पर फाड़ ।।2।।

रोगी को निर्मल काया, योगी को मुक्ति,
निर्धन को देते माया, भोगी को भक्ति,
पापी से पापी भी, हो जाता भव से पार ।।3।।

गंगाराम बाबा हम हैं, तेरे दिवाने,
नहीं मांगते तुमसे, दौलत खजाने,
'प्रेम' - सुधा बरसाने, तुम आ जावो इक बार ।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - थाली भर के ल्याई खिचड़ो ...)

प्रेमभाव सै आज म्हें बाबा करी रसोई त्यारजी।
जीमो गंगाराम प्रभु म्हें खूब करां मनुहारजी ।।टेर।।

गंगाजल आंगन छिड़कायो, बाबा थानै आणो है,
चन्दन चौकी बैठ कै बाबा, थानै भोग लगाणो है,
थानै आज जिमास्यां बाबा, भांत - 2 की बानगी ।।1।।

पूड़ा, पूड़ी, खीर, जलेबी, सीरो आज बणायो है,
दाल, बाटी, चूरमै को, सागै मेल मिलायो है,
सांगरियै रो साग, गट्टा, दहीबड़ा है त्यार जी।।2।।

बरफी, घेवर और इमरती, संग में मोतीपाक है,
रसगुल्लो और केसरबाटी, चमचम, पेठापाक है,
सोनपापड़ी, गुलाब जामुन खावो दिलकसार जी ।।3।।

दालमोठ और भुजिया बाबा, पाछै पापड़ खाओजी,
छाछ पीओ या कुल्फी खाओ, नागर पान चबावोजी,
छप्पन भोग बणायो बाबा, खूब करां सत्कारजी ।।4।।

शरमाणै को काम के बाबा, मांग - मांग कर लेवोजी,
भोग लगा कर भोजन मांही, इमरत रस भर देवोजी,
आज 'प्रेम' घर बण्या पावणा, खूब बढायो मानजी।।5।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - भावना की ज्योत को जगाके ...)

गंगाराम नाम को तू गाके देखले,
संकट दूर होंगे गुण गाके देखले,
एक बार तू भी आजमा के देखले
संकट दूर होंगे ... ।।टेर।।

है बाबा से बड़ा, बाबा का ये नाम,
हो नाम के जपन से, सफल सब काम,
भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन,
नाम के सहारे किया बाबा का भजन,
अन्तर में नाम ये बसाके देखले ।।1।।
संकट दूर होंगे ...

ये राम की लीला, और गंगा की शक्ति,
कोई पुण्य से ही मिलती, बाबा की भक्ति,
भक्ति गर होगी तेरी निष्काम,
बाबा दौड़े आएगे सुनके आधे नाम,
बाबा को अपना बनाके देखले ।।2।।
संकट दूर होंगे ...

दीनो के हैं साथी, ये विष्णु अवतार,
संसार में ना देखा, कोई ऐसा दातार,
बड़े ही दयालू हैं बाबा गंगाराम,
इनके भजन से है मिलता आराम,
चरणों से प्रीति लगाके देखले ।।3।।
संकट दूर होंगे ...

ॐ जय हो पंचदेव दरबार की ॐ जय हो बाबा गंगाराम की ॐ जय हो झुंझनूंधाम की ॐ

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - इंजन की सीटी ...)

चालो-चालो रे - 2, बाबा के म्हारो, मन बोले - 2,
झुंझनूं नगरी चालो म्हारो मन बोले ।।टेर।।

पंचदेव दरबार मं बाबो गंगाराम बिराजै,
कलियुग रो अवतारी बाबा गरूड़ सवारी साजै,
काटै पाप सारा-2, बाबो मुक्ति द्वार खोले - 2
झुंझनूं .... ।।1।।

बाबाजी रा दरसन करस्यां, जीवन सफल बणास्यां,
ढप ढोलक री ताल नाचस्यां, मीठा भजन सुणास्यां,
गूंजै धरा गगन सै - 2, जय-जय गंगाराम बोले - 2
झुंझनूं ... ।।2।।

गंगा दशहरो उत्सव आवै, भगतां रो मन हरसै,
मनचाया फल 'मुन्ना' पावे, बाबा किरपा बरसै,
आयो हेत रो - 2, इब हेलो, नैया पार होले - 2
झुंझनूं ... ।।3।।

कितना सुन्दर, कितना पावन, बाबा तेरा नाम।
बाबा गंगाराम जपे से, मिल जाता आराम।।

ॐ जय हो पंचदेव दरबार की ॐ जय हो बाबा गंगाराम की ॐ जय हो झुंझनूंधाम की ॐ

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - कान्हा रे कान्हा ...)

सारे जग में गूंजे नाम - बाबा गंगाराम
जिसमें है गंगा और राम - बाबा गंगाराम
बाबा गंगाराम, बाबा गंगाराम, सारे जग में...

श्रावण शुक्ला दशमी को ये अवतारी बन आया
झुंझनूं अपना धाम बना, भक्तों का काम बनाया
प्यारा-प्यारा यही नाम - बाबा गंगाराम ।।1।।

इनकी भक्ति का मौका तो किस्मत से ही आता
जो भी इनकी शरण में आता बेड़ा पार लगाता
पल में बनते बिगड़े काम - बाबा गंगाराम ।।2।।

बाबा के मंदिर में दुर्गा बजरंगी भी साजे
श्री गणेश मां लक्ष्मी संग में शंकरजी विराजे
पंचदेव का ये धाम - बाबा गंगाराम ।।3।।

पुष्प भाव के प्रेम की डोरी से गजरा बनालो
'आशीर्वाद' मिलेगा मन से छल और कपट मिटालो
मिटते तेरे कष्ट तमाम - बाबा गंगाराम ।।4।।

ॐ जय हो पंचदेव दरबार की ॐ जय हो बाबा गंगाराम की ॐ जय हो झुंझनूंधाम की ॐ

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - महामंत्र का जाप करो ...)

श्री गंगाराम देवाय नमः - 3
जो पावन मंत्र ये गायेगा, उसे दुख संकट न आयेगा,
ये भव से पार करायेगा, श्री गंगाराम देवाय नमः ...

भक्त शिरोमणि ने इस मंत्र को, अपने हृदय बसाया था,
महामंत्र की महाशक्ति का, जग को बोध कराया था,
जो सच्चे मन से गायेगा, बाबा की भक्ति पायेगा ।।1।।

गंगाराम के महामंत्र में, गंगा है और राम है,
गंगाजल में निर्मलता है, राम में आराम है,
जो गंगाराम दोहरायेगा, वो दोनों को पा जायेगा ।।2।।

गंगाराम जपे से भक्तों, आत्मशक्ति बढ़ जाती है,
माया के बन्धन कटते हैं, और मुक्ति मिल जाती है,
'डिम्पल' जो हृदय बसायेगा, वो मुक्ति मार्ग को पायेगा ।।3।।

भक्तों का दुख हरने आये नारायण अवतारी।
गंगाराम के रूप में आये चक्र सुदर्शनधारी।।

ॐ जय हो पंचदेव दरबार की ॐ जय हो बाबा गंगाराम की ॐ जय हो झुंझनूंधाम की ॐ

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - तू ने पायल है छनकाई ...)

मेरे बाबा गंगाराम, तुमको शत-शत करूं प्रणाम,
कर दे, मेरा भी बेड़ा पार, ओ बाबा, विष्णु के अवतार।

झुंझनूं धाम तुम्हारा, लगे भक्तों को प्यारा,
करे तू वारा न्यारा, ओ बाबा ओ···
कैसा सजा तेरा श्रृंगार, देखता रहूं मैं बारंबार,
कर दे... ।।1।।

खड़ा मैं द्वार तुम्हारे, नैन बस तुझे निहारे,
ये जीवन तेरे सहारे, ओ बाबा ओ···
तेरी सूरत मन में भाई, तेरी भक्ति दिल में समाई,
कर दे ... ।।2।।

करूं विनती ये तुमसे, रहे किरपा बस मुझपे,
कोई भी काम न अटके, ओ बाबा ओ···
तू तो देवों में मतवाला, सारे भक्तों का रखवाला,
कर दे... ।।3।।

जयन्ती तेरी आई, बंटे है आज बधाई,
कि घर-घर धूम मचाई, ओ बाबा ओ···
नाचे सब मिल नौ-नौ ताल, उत्सव आयेंगे हर साल,
कर दे... ।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - छोटा सा एक घर होगा ...)

गंगा से जब राम मिले, बाबा गंगाराम बने,
पावन बड़ी है गंगा धार, डुबकी लगाले एक बार।

पंचदेव की पावन गंगा, आज झुंझनूं बहती है,
कलिकाल में निज भगतों के, पापों को ये धोती है,
तू भी नहाले एक बार ··· डुबकी लगाले एक बार ।।1।।

गंगोत्री से मरूभूमि में, धारा बन कर आई है,
गंगा के संग राम विराजे, बहुत बड़ी सकलाई है,
किसका करे तू इंतजार ··· डुबकी लगाले एक बार ।।2।।

जब - 2 पाप बढा धरती पर, ईश्वर ने अवतार लिया,
'हर्ष' धरा से पाप मिटाये, भगतों को भव पार किया,
उनका किया है उद्धार ··· डुबकी लगाले एक बार ।।3।।

बाबा तेरे श्रीचरणों में नित उठ शीश झुकायेंगे।
बाबा गंगाराम तुम्हारी, घर-घर ज्योत जगायेंगे।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - मेरा बाबू छैल छबीला ...)

ओ बाबा विष्णु के अवतारी, तुमको ध्याऊँ रे,
दर तेरे आऊँ, शीश झुकाऊं, किरपा पाऊँ रे।।

विश्व शान्ति के खातिर, आप धरा पर आये,
जग के हर कोने में, धर्म ध्वजा फहराये,
गुण तेरा गाऊं, जग को बताऊं, तुझको चाहूँ रे ।।1।।

नगर झुंझनूं में बाबा, मन्दिर बड़ा निराला,
सबके संकट हरता, संकट हरने वाला,
दिल में हमारे, नाम की तुम्हारे, ज्योत जलाऊँ रे ।।2।।

जब-जब संकट आया, आप यहां अवतारे,
'हर्ष' कहे भगतों को, भव से पार उतारे,
भजन बनाऊं, सबको सुनाऊं, महिमा गाऊँ रे।।3।।

गंगाराम जपे से भक्तों, आत्मशक्ति बढ जाती है।
माया के बन्धन कटते हैं, और मुक्ति मिल जाती है।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - लेके पहला पहला प्यार ...)

ओ लागा झुंझनूं में दरबार, हुआ देखो चमत्कार,
देखो धरती पे आया है विष्णु अवतार।

लीला निराली इसकी, खुद भी निराला,
सारे जगत में इसका, है बोल बाला,
देखा ऐसा ना दातार, झोली भर देता करतार।
देखो धरती.... ।।1।।

पहली - पहली बार जो भी, दरश किये हैं,
दिल के कमल देखो, उनके खिले हैं,
आते देखे बारम्बार, तुम पे वारी है सरकार।
देखो धरती.... ।।2।।

देवों के सुत हैं, देवकीनन्दन,
जिनकी भक्ति को, है जगवन्दन,
दर्शन से हो बेड़ा पार, वो ही नैया के पतवार।
देखो धरती .... ।।3।।

नजर मिलाके कहदो, हाल सारे मन का,
रस्ता निकाले ये तो, हर उलझन का,
'सोनी मारवाल' बलिहार, दर पे आये हाथ पसार।
देखो धरती.... ।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - दुनिया से जाने वाले जाने चले जाते है कहां ...)

मेरे बाबा झुंझनूंवाले, भक्तों की तो सुनते हैं सदा,
जो भी आए इनके दर पे, झोली उनकी भरते हैं सदा।

ऐसा है वो पंचदेव मन्दिर, बैठे सारे देव जिसके अन्दर,
जिसने प्रीत लगाई सांची, उसकी चिठ्ठी बाबा ने बांची,
इनको अपना मीत बनाले, भक्तों की तो ... ।।1।।

मांगो इनसे मन की मुरादें, कह दो इनसे दिल की बातें,
सुनते है विष्णु अवतारी, पल में टाले विपदा सारी,
करदो नैया इनके हवाले, भक्तों की तो ... ।।2।।

भक्त इनके देवकीनन्दन, करके बाबा के चरणों में वन्दन,
देकर दुनिया को ये ज्ञान, बाबा कलियुग के भगवान,
ये ही जग के हैं रखवाले, भक्तों की तो ... ।।3।।

पंचदेव मन्दिर की शोभा, मुख से बरणी न जाए।
बाबा गंगाराम के दर्शन, जीवन सफल बनाए।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – तावड़ो मन्दो पड़ ज्या रे ...)

भगत नै आयो बुलावो है – 2
कोई चालो झुंझनूं धाम, स्वर्ग धरती पर आयो है।

अग्रवंश में जनम्या बाबा, विष्णु का अवतार,
गंगाराम नाम है जिणको, त्रिभुवन का करतार,
सुनहरो मौको आयो है ।।1।।

पंचदेव मन्दिर की शोभा, मुख से बरणी न जाय,
हरियल बागां माय कोयलिया, बाबा का गुण गाय,
मोर भक्तां संग नाचै है ।।2।।

बाबाजी का दर्शन पाकर, जीवन सफल बणाय,
तन, मन पावन होवै भक्त का, पाप सभी कट जाय,
शरण इनकी जो आवे है ।।3।।

दास 'महेश' कहे 'गिरधर' से बाबा को भज देख,
हो जा महर जरा सी जिसपे, बदले भाग्य की रेख,
होवै फिर मनका चाया है ।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – जहां डाल-डाल पे ...)

जहां कण-कण से श्री गंगाराम का गूंजे जय-जयकारा,
वो झुंझनूंधाम है प्यारा, वो पावन धाम है न्यारा,
जहां पावन गंगा पाप हरे, श्री राम का मिले सहारा, वो झुंझनूं..

जहाँ देवालय श्री गंगाराम का, मन को बड़ा लुभाये,
जहाँ सिंहासन जगपालक का, भक्तों को न्याय चुकाये – 2
जहाँ पंचदेव दरबार निराला, भक्तों का रखवारा,
वो झुंझनूं ... ।।1।।

जहाँ दीन दुखी सब आते हैं, और अपना कष्ट मिटाते,
जहाँ विष्णु अवतारी की महिमा, भक्तशिरोमणि गाते – 2
जहाँ राजा रंक लगाये अर्जी, फल खाये जग सारा,
वो झुंझनूं ... ।।2।।

जहाँ सूनी गोद भरे किलकारी, भक्त कभी ना तरसे,
जहाँ भाव भक्ति का भोग लगे और, ममता झर-झर बरसे – 2
जहाँ अंधियारा जीवन से दूर हो, आंगन हो उजियारा,
वो झुंझनूं ... ।।3।।

जहाँ गंगादशमी मेला लागे, आये नर और नारी,
जहाँ नैया भव से पार लगे, बाबा सा हो पतवारी – 2
जहाँ 'मुन्ना' प्रभु के भजन सुनाये, नमन करे जग सारा,
वो झुंझनूं ... ।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – एक तेरा साथ हमको ...)

बाबा गंगारामजी की महिमा जो गायेगा,
उसका जीवन तर जायेगा,

त्रेता में थे प्रभु राम, द्वापर में ये घनश्याम, श्री विष्णुरूप में,
कलयुग में गंगाराम, करने को जनकल्याण, श्रीविष्णु ही जन्मे,
बाबा गंगाराम – 2 जी का ध्यान जो लगायेगा,
उसका जीवन ... ।।1।।

श्री पंचदेव दरबार, महिमा है अपरम्पार, सभी ये मानते,
झुंझनूं है पावन धाम, जहां बाबा गंगाराम, सभी ये जानते,
बाबा गंगाराम – 2 के दरबार में जो आयेगा,
उसका जीवन ... ।।2।।

मन जोड़ लो इनसे, सब छोड़ दो इनपे, तू सब सुख पायेगा,
अब नींद से जागो, मदमोह को त्यागो, रे शुभ दिन आयेगा,
बाबा गंगाराम – 2 का जयकारा जो लगाएगा,
उसका जीवन ... ।।3।।

इस कलियुग के कलिमलहारी, बाबा का नित नाम जपो।
पंचदेव के मध्य विराजे, बाबा गंगाराम भजो।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – नखरालो देवरियो ...)

आवो कीर्त्तन मांही आज, बाबाजी थारा लाड करां,
लाड करां ओ थारा लाड करां, आवो ...

कीर्त्तन तो है एक बहानो, थांसू मिलनै तांई,
भगतां मिल दरबार सजायो, थारै दर्शन तांई,
आवो दरश दिखावो आज, बाबाजी.... ।।1।।

विष्णु आप हो, राम आप हो, आप ही पालनहारी,
अटक्योड़ी नैया न भव सूं, पल मं तारणहारी,
थे ही भगतां रा प्रतिपाल, बाबाजी.... ।।2।।

भोला ढाला भगतां री, कुटिया मं आकै देखो,
भगतां री नैणा मं थारी, भगती रो रंग देखो,
थारो खूब करां सिणगार, बाबाजी.... ।।3।।

धाम झुंझनूं थारो सबनै, लागै प्यारो – प्यारो,
श्रद्धा सूं माथो टेक्यां थे, सारा दुखड़ा टारो,
थारै चरणां शीश नवाय, बाबाजी.... ।।4।।

भांत-भांत री बणी रसोई, थानै आज जिमावां,
'मुन्ना' रै भजनां सूं बाबा, थानै खूब रिझांवा,
थारी ज्योत जगाई आज, बाबाजी.... ।।5।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – है प्रीत जहाँ की ...)

धरती से लेकर अम्बर तक, इसका झंडा लहराता है,
है नारायण अवतार यही, ये गंगाराम कहाता है,
जय हो – जय हो – 2।।टेर।।

भक्तों के ऊपर युग–युग में जब दुख के बादल छाते हैं,
उस परम ब्रह्म की सृष्टि के, दीपक बुझने लग जाते हैं,
धरती पर फिर लीला करने – 2, वो युग अवतारी आता है।।1।।

झुंझनूं में इसका धाम बना, जो पंचदेव कहलाता है,
उसकी माटी के कण–कण में, भक्ति का नूर समाता है,
तप, त्याग, तेज, बलिदानों से–2 दुनिया को राह दिखाता है।।2।।

ये राम नाम की दौलत है, पावन गंगा की धारा है,
जिसने भी गोता खाया है, उसे भव से पार उतारा है,
है अजर अमर इसकी माया–2, ये नव निधियों का दाता है।।3।।

कलियुग में वरदायी बाबा, भक्तों के खातिर आया है,
दुर्गा, लक्ष्मी, शिव और कपि, मिलकर दरबार सजाया है,
जो 'प्रेम' भाव से करें नमन–2, वो मन चाहा फल पाया है।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – मैं तो छोड़ चली ...)

ओ आया आया सुरंगा त्योहार, बाबा गंगाराम का,
ओ आओ मिलके करेंगे श्रृंगार, बाबा गंगाराम का।।

फूलों से आंगन रंगोली सजावो,
गलियों में घी के दीपक जलाओ,
ओ मंगल गाते हैं, नर और नार,
बाबा गंगाराम का... ।।1।।

दरबार प्यारा है, प्यारी है सूरत,
चन्दा सी चमके है, बाबा की मूरत,
देखो चमके है, हीरों का हार,
बाबा गंगाराम का ... ।।2।।

सावन की दशमी को, आई सवारी,
अवतार लेने गगन से पधारी,
गुण गाता है सारा संसार,
बाबा गंगाराम का ... ।।3।।

विष्णु के अवतार, कलयुग में आये,
मरूधर की धरती को, तीरथ बनाये,
भोले भगतों ने पाया न पार,
बाबा गंगाराम का ... ।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – आओ बच्चों तुम्हे ...)

आओ भक्तों मिलकर गाये, महिमा गंगाराम की,
गूंज रही है जै जैकारी, जग में जिनके नाम की।।
जय हो गंगाराम ।टेर।।

गीता का उपदेश यही, जब पाप अधिक बढ जाता है,
मनुज रूप में भगवन आते, विश्व शान्ति पाता है,
राम कभी तो श्याम कभी, ये गंगाराम कहाता है,
भक्तों के मन भाई जोड़ी, गंगा के संग राम की,
गूंज रही है... ।।1।।

भक्तशिरोमणि को सपने में, जब आदेश सुनाया था,
मरूभूमि में जाकर उसने, पावन धाम बनाया था,
चिता पे चढकर जग के खातिर, अपना हाथ उठाया था,
धर्म ध्वजा फहराई जग में, जिसने गंगाराम की,
गूंज रही है... ।।2।।

कलयुग का दातार है बाबा, विष्णु का अवतारी है,
नगर झुंझनूं वासी बाबा, दीनों का हितकारी है,
पंचदेव का पंच प्रभु ये, बाबा मंगलकारी है,
गंगोत्री से बहकर आई, धारा जिसके नाम की,
गूंज रही है ... ।।3।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – ...)

अगर तेरे मंदिर की रज त्रेता में मिली होती
हनुमत को संजीवन लाने की दरकार नहीं होती

तेरे मंदिर की रज के, कण–कण में अमृत हैं
माथे पे लगाते ही, खुल जाती किस्मत है
अगर यही रज लखन के भी जो सर पे लगी होती
हनुमत...

एक भक्त की भक्ति का, बल इसमें शामिल है
इक जोगन के तप का ये रज पावन फल है
अगर त्याग और भक्ति की ये दवा बनी होती
हनुमत...

'सोनू' है गर सच्चा विश्वास तेरे दिल में
ये रज फिर हर लेगी विपदा तेरी इक पल में
जिनके घर ये रज हो उनके कमी नहीं होती
हनुमत...

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - संसार है इक नदियां ...)

मेरे बाबा गंगाराम, हमने प्रण ठाना है,
तेरी धरम पताका को, जग में फहराना है ।।टेर।।

लेकर तेरा आशीष, हम बढते जायेंगे,
तेरी जय-जय के स्वर से, अमृत बरसायेंगे-2
कलयुग के साये में, सतयुग को लाना है ।।1।।

धरती से अम्बर तक, तेरा ही हो सुमिरन,
बस भजन तेरे गूंजे, हो गली-गली कीर्त्तन-2,
संसार के हर घर को हमें स्वर्ग बनाना है।।2।।

हे कलयुग अवतारी, ये जीवन है तेरा,
अन्तिम दम तक बाबा, गुणगान करें तेरा-2,
नहीं और समय हमको, अब व्यर्थ गँवाना है ।।3।।

कलिकाल में प्रगट भये, बाबा झुंझनूंवासी।
गंगाराम नाम धरि आये, पंचदेव अविनाशी।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - अब तीर चले, तलवार चले ...)

तेरी ज्योति जले, हर घर-घर में,
तेरा उत्सव आज मनाया है ।।टेर।।

गंगादशहरा आया है, खुशियां भर-भर लाया है,
तुमको आज बुलायेंगे, उत्सव जोर मनायेंगे,
हम नाचेंगे, हम गायेंगे, तेरा उत्सव ... ।।1।।

भजन तुम्हारे गूंज रहे, भगतों के मन झूम रहे,
मोदक मेवा लाये हैं, फूल चढाने आये हैं,
हम नमन करे, हम मनन करे, तेरा उत्सव... ।।2।।

छप्पन भोग लगाया है, बुन्दियां थाल मंगाया है,
लाल गुलाबी फूलों से, तुमको आज सजाया है,
बड़ा प्यारा लगे, बड़ा न्यारा लगे, तेरा उत्सव... ।।3।।

दिल में तेरा ध्यान धरें, 'सूरज' ये अरदास करे,
गंगाराम प्रभु तेरा, उत्सव रोज मनाया करें,
हमें शक्ति दे, तेरी भक्ति दे, तेरा उत्सव... ।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - ऐ मेरे वतन के लोगों ...)

एक देव जगत में आया, कई चमत्कार दिखलाया।
जिसे पूज रही है दुनियां, वह गंगाराम कहलाया।।

कोई नारियल भेंट चढाता, कोई छप्पन भोग लगाता।
कोई बुन्दिया थाल सजाता, हाथों से चँवर ढुलाता।
कोई खाली दौड़े आया, वह भी इच्छा फल पाया।।
जिसे पूज .... ।।1।।

कहीं रोक तूफान दिखाता, भक्तों की लाज बचाता।
कहीं अपना कोप दिखाता, पापों से दूर भगाता।
कहीं सपने-सपने आया, आकर उपदेश सुनाया।।
जिसे पूज .... ।।2।।

कहीं स्वर्गलोक दिखलाया, अपनी माया फैलाया।
कहीं अनुपम बाग बनाया, कलियों से फूल रचाया।
कहीं दीन जनों को भाया, उनको निज गले लगाया।।
जिसे पूज .... ।।3।।

ओ मां लक्ष्मी के लाला, उस राजपुताने वाला,
सिर मुकुट धवल गले माला, अमरों में देव निराला।
कर दुश्मन का मुँह काला, कभी पड़े ना यम से पाला।।
जिसे पूज .... ।।4।।

जब महाकलि का पहरा, जल भवसागर में लहरा।
पापों का झंडा फहरा, ब्रह्माण्ड भी भय से कहरा।
एक ब्रह्म ने भेजी काया, 'हृदय' भी शीश झुकाया।।
जिसे पूज .... ।।5।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - मुझे इश्क है तुम्ही से ...)

गंगाराम की कृपा से हर काम चल रहा है,
झुंझनूं के मन्दिरों में, वो दीप जल रहा है।।

अनमोल है जहां में, झुंझनूं का ये खजाना,
उसको मिला सहज में, जिसने हृदय से माना,
इस छत्र के भरोसे, संसार पल रहा है,
झुंझनूं के मन्दिरों ... ।।1।।

अंतरमुखी हो बाबा, अन्तर के भाव जानो,
है भाव मेरी पूंजी, मेरी भावना पिछानो,
भावों का सिलसिला तो, सदियों से चल रहा है,
झुंझनूं के मन्दिरों ... ।।2।।

तूने सुदामाजी के, तन्दुल के भाव जाने,
मेरे लिये ओ बाबा, क्यूं कर रहा बहाने,
कर दे क्षमा ओ दानी, क्यूं मुझको छल रहा है,
झुंझनूं के मन्दिरों ... ।।3।।

जिसने जगाया जग को, उसको जगा रहा हूँ,
बाबा तेरी कृपा से, मैं गीत गा रहा हूँ,
'राजेन्द्र' दर्शनों को, कब से मचल रहा है,
झुंझनूं के मन्दिरों ... ।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - चलत मुसाफिर मोह ...)

सपने में दरश दिखा गया रे, झुंझनूंवाला बाबा।
सोया भाग्य जगा गया रे, झुंझनूंवाला बाबा ।टेर।।

भक्तों ने पूछा बाबा नाम तेरा क्या है - 2,
नाम गंगाराम बता गया रे, झुंझनूंवाला बाबा ।।1।।

भक्तों ने पूछा बाबा धाम तेरा क्या है - 2,
झुंझनूं नगरिया दिखा गया रे, झुंझनूंवाला बाबा ।।2।।

भक्तों ने पूछा बाबा वेष तेरा क्या है - 2,
केसरिया बागा पहन आ गया रे, झुंझनूंवाला बाबा ।।3।।

भक्तों ने पूछा बाबा भोग तेरा क्या है - 2,
मोदक मेवा बता गया रे, झुंझनूंवाला बाबा ।।4।।

भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन - 2,
मन्दिर तेरा बना गया रे, झुंझनूंवाला बाबा ।।5।।

शोभा तुम्हारी देख भक्त जन नाचे - 2,
'सरल' के मन में भा गया रे, झुंझनूंवाला बाबा।।6।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - मेरा बाबू छैल छबीला ...)

बाबा गंगाराम पधारे, सब कोई नाचो रे,
भजनों में झूमों, चरणों को चूमो, सब कोई नाचो रे।।

जेठ की दशमी आई, गंगा दशहरा लाई,
भागीरथी के जल में, गंगा पुनः लहराई,
गंगाजल लाओ, चरणामृत पावो, सब कोई नाचो रे ।।1।।

पावन पर्व दशहरा, अपनों का मेला है,
अवसर बड़ा सुनहरा, उत्सव की बेला है,
ताली बजावो, खुशियां मनावो, सब कोई नाचो रे ।।2।।

झुंझनूं से आये है विष्णु के अवतारी,
झुथाराम पिता है, मां लक्ष्मी महतारी,
मोहरें लुटावो, पलना झुलावो, सब कोई नाचो रे ।।3।।

गंगादशहरा आया, आंगन सजावो रंगोली,
बाबा के भक्तों की, ये ही दीवाली, ये ही होली,
दीये जलाओ, रंग लगावो, सब कोई नाचो रे ।।4।।

गंगाराम शरण है, कल्पतरू की छाया,
है 'राजेन्द्र' जगत में, राजयोग की माया,
वैभव ले जाओ, योग जगावो, सब कोई नाचो रे ।।5।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - चूड़ी मजा न देगी ...)

उत्सव है आज तेरा, तुमको बुला रहे हैं,
स्वागत में भक्त बाबा, पलकें बिछा रहे हैं ।टेर।।

सब भक्त गा रहे हैं, खुशियाँ मना रहे हैं,
फूलों की लेके लड़ियाँ, आंगन सजा रहे हैं - 2,
हाथों में ज्योत लेकर, दीपक जला रहे हैं ।।1।।

दरबार लग गया है, सब साज सज गया है,
बस आपकी कमी है, सब काम हो गया है - 2
अब आ भी जाओ बाबा, कबसे बुला रहे हैं ।।2।।

हे पंचदेव स्वामी, लीला तुम्हारी न्यारी,
संसार में तुम्हारी, फैली है महिमा भारी - 2,
तेरे 'प्रेम' की कहानी, सबको सुना रहे हैं ।।3।।

जिस तपोभूमि के कण कण में, हैं छिपे हुये भगवान।
हो गई धन्य वो जन्मभूमि, जहां प्रगटे गंगाराम ।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - ढोला ढोल मंजीरा ...)

घर-घर बान्दनवार बन्धास्यांजी,
बाबा थारो जन्म भयो, थारा लाड लडास्यांजी ।टेर।।

श्रावण शुक्ला दशमी कै दिन, आय लियो अवतार,
धाम झुंझनूं धन्य हुयो थे, प्रगट्या गंगाराम,
ओ थानै झूलै मांय झुलास्यांजी, बाबा थारो... ।।1।।

माता लक्ष्मी हरखै भारी, हरखै सब नर-नारी,
झूथारामजी बांटे खुशियां, घर में उत्सव भारी,
ओ थारा हिलमिल मंगल गास्यांजी, बाबा थारो... ।।2।।

रूप निरालो बाबा थारो, मन म्हारो बेचैन,
झलक मोहिनी देखण खातिर, व्याकुल होर्‌या नैन,
ओ इन नैना की प्यास बुझास्यांजी, बाबा थारो ... ।।3।।

देवलोक मं बजी दुन्दुभी, मच्यो जगत मं शोर,
लीलाधारी नर तन धार्‌यो, ना पायो कोई छोर,
ओ थारी महिमा गाय बतास्यांजी, बाबा थारो ... ।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – लड़की तुम्हारी कुवांरी रह जाती ...)

न्यूतो दियो है बाबा कीर्त्तन को थानै,
होके गरूड़ असवार, बाबाजी बेगा आजईज्यो ।।टेर।।

बाबा गंगाराम प्रभु, आज जरूरी आणो है,
छप्पन भोग बणायो है, आकर भोग लगाणो है,
न्यूतो दियो ... ।।1।।

मीठी-मीठी तान मं, थानै भजन सुणावांगा,
नाच कूदकै कीर्त्तन मं, थानै आज रिझावांगा,
न्यूतो दियो ... ।।2।।

लक्ष्मी दुर्गा बजरंगी, सागै शिव परिवार है,
भक्त शिरोमणि कै संग मं, सज्यो थारो दरबार है,
न्यूतो दियो ... ।।3।।

भांत-भांत कै फूलां सै, झांकी सजी प्यारी है,
कीर्त्तन की तैयारी है, थारी इन्तजारी है,
न्यूतो दियो ... ।।4।।

पंचदेव भगवान राम गंगा की निर्मल धारा।
ले डुबकी जो निकले इससे बने सभी का प्यारा।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – एक परदेशी मेरा दिल ...)

देवों की निराली असवारी आई है,
बाबा गंगाराम की सवारी आई है ।।टेर।।

चले विनायक मूसे चढ़कर, शिवशंकर आये बैलन पर,
शेरोवाली देवी माँ भवानी आई है।। बाबा... ।।1।।

नाच रहे ले हाथ में घोटा, चले पवनसुत पहन लंगोटा,
माता लक्ष्मी मतवारी आई है।। बाबा ... ।।2।।

गरूड़ सवारी बाबा आये, भगतों को देखे मुस्काये,
कैसी है निराली अदा मन भाई है।। बाबा ...।।3।।

नगर झुंझनूं समां सुहानी, भक्त शिरोमणि करे अगवानी,
भक्तों के मन खुशियारी छाई है ।। बाबा ... ।।4।।

'मोहन' का दिल मचल गया है, देख नजारा सम्भल गया है,
देखने की बारी अब हमारी आई है ।। बाबा... ।।5।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – होठों से छू लो ...)

सुख दुःख के सागर में, सूझे ना किनारा है,
हे बाबा गंगाराम, मेरा तू ही सहारा है ।।टेर।।

हे पंचदेव स्वामी, क्या भूल हुई मुझसे,
आँखों में बसा लेना, एक अरज यही तुमसे,
एक आश तुम्हारी है, विश्वास तुम्हारा है ।।1।।

सूरज में तपन तुमसे, सागर में लहर तुमसे,
चन्दा में शीतलता, फूलों में महक तुमसे,
कण - कण में समाये हो, हर श्वास तुम्हारा है ।।2।।

भगतों से भरा बाबा, दरबार तुम्हारा है,
मैंने क्या पाप किया, क्यों मुझे बिसारा है,
इस बालक को बाबा, तेरा ही सहारा है ।।3।।

कलियुग के तुम्हीं बाबा, अवतार कहाये हो,
तुम मनुज रूप धरके, धरती पर आये हो,
उजड़ी इस दुनिया की, बगिया को संवारा है।।4।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – जे हम तुम चोरी से ...)

जयन्ती आई है, कि खुशियां लाई है,
सावन की छाई बहार,
आज उत्सव की शाम है, जयन्ती आई है ।।टेर।।

सावन शुक्ला दशमी की पावन बेला आई,
बाबा का है उत्सव, भक्तों में खुशियां छाई,
छोटे हो, या बड़े - 2, झूमे तमाम है,
जयन्ती आई है ।।1।।

फूलों के गजरे हैं और केसर चन्दन महके,
रंग गुलाल उड़ाये और सेवक सारे चहके,
होठों पर, आज बस - 2 बाबा का नाम है,
जयन्ती आई है ।।2।।

छप्पन भोग सजे हैं, और पावन ज्योत जलाई,
'हर्ष' खुशी से नाचे, बांटे है आज बधाई,
दर्शन धन, लूट लो - 2 दर्शन की शाम है,
जयन्ती आई है ।। 3।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – गोरा – गोरा ...)

दसों दिशायें मंगल गाये, देव दासियां देव मनाए।
जब गंगादशहरा आयेजी, दशमी को,
सारा झुंझनूं नगर सज जायेजी दशमी को ।।टेर।।

पंचदेव मन्दिर का मेला, मन का मैल मिटाये,
जेठ सुदी दशमी झुंझनूं में प्रेम रंग बरसाये,
झिरमिर-झिरमिर पड़े फुहार, बारिश करती है मनुहार,
चौमासा गीत सुनायेजी दशमी को।।1।।

बैकुण्ठ तिलक भारी मस्तक पर भक्तों का मन मोहे,
शीश मुकुट कानों में कुण्डल तन पीताम्बर सोहे,
नर-नारायण श्री भगवान, बाबा गंगाराम सुजान,
तेरा दर्शन दुःख मिटायेजी दशमी को।।2।।

तेजोमय तू दिव्य तेज से कोटि किरण दरसावे,
हे करूणामय तू करूणा से बिगड़े काम बनावे,
तुझमें गंगा तुझमें राम, तू है निश्छल तू निष्काम,
तू तो अक्षय कृपा लुटायेजी दशमी को।।3।।

शिव-शक्ति लक्ष्मी हनुमत संग सजे विष्णु अवतारी,
पंचदेव के मन्दिर में सरपंच बना तू भारी,
सबकी कृपा का तू आधार, तू है कलयुग का दातार,
गंगाजल में राम नहायेजी दशमी को।।4।।

गले में सोहे पुष्प हार, पुष्पों की सौरभ छाई,
दशमी का त्योहार दशहरा, पर्व बड़ा सुखदाई,
तेरा तुझ पर देऊं वार, देऊं तन-मन-धन न्योछार,
'राजेन्द्र' भी महिमा गायेजी दशमी को ।।5।।

।।श्री भक्तशिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज – मेरे नैना सावन भादो ...)

देवकीनन्दन हाथ कृपा का, मेरे सिर पे धरो ना – २ ।टेर।।

तुमने पहचानी, बाबा की वाणी,
तोड़ दिए सब जग के बन्धन,
साथ नहीं कोई आया ··· फिर भी वचन निभाया,
जग को किया था रोशन जैसे, मुझको आज करो ना ··· ।।1।।

बाबा स्वामी हैं, अन्तर्यामी हैं,
जिनकी महिमा की गाथायें,
तेरी समाधि गाये ···, दुनिया शीश झुकाये,
दर्शन को मन मचल रहा है, अब तो दूरी हरो ना ··· ।।2।।

तुम ही सहारे हो, भव के किनारे हो,
सारी दुनिया हुई बेगानी,
क्या तुमको मैं बोलूं ···, अपने दुखड़े खोलूं,
'केशव' है दर-दर का सताया, आकर पीर हरो ना ··· ।।3।।

आशीर्वाद दिवस की बेला, भक्तशिरोमणि कहे पुकार।
आशीषों से झोली भर लो, जोड़ो मन से मन के तार।।

।।श्री भक्तशिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज – बाबुल की दुआयें ...)

हे देवकीनन्दन तुमने तो, तन मन धन सब कुछ वार दिया,
सतपथ की राहों पर चलकर, अपना सपना साकार किया।

जब रात अन्धेरी सपने में, एक ज्योति किरण दिखलाई दी,
धरती से निकली थी मूरत, बाबा ने राह दिखाई थी,
तुम निकल पड़े थे अकेले ही, इतिहास नया निर्माण किया।।१ ।।

जीवन था सरल सौम्य शिव सम, कोई भी महिमा ना जाना,
फिर महाप्रयाण के अवसर पर, दुनिया ने तुमको पहचाना,
सूरज का रथ भी ठहर गया, पावक ने भी सत्कार किया ।।२।।

भक्ति के पथ पर कांटे हैं, ये रीत पुरानी देखी है,
प्रहलाद भगत, नरसी, मीरा, सबने विपदायें झेली हैं,
तुमने भी कांटो को सहकर, हमको फूलों का हार दिया।।३ ।।

निर्बल के बल, निर्धन के धन, तुम भक्तों के रखवारे हो,
हे परमभक्त, हे सत्यवीर, भक्तों की आंख के तारे हो,
अब 'केशव' का उद्धार करो, जैसे सबका उपकार किया।।४।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – धारा जो बह रही है ...)

अमृत बरस रहा है, गंगाराम के भवन में,
भक्ति के पुष्प महके ··· पंचदेव के चमन में – 2

कीर्त्तन की प्यारी बेला, भक्तों का है ये मेला
हृदय के हृदय मिलन से, कोई भी ना अकेला-2,
हर श्वास गंगाराम, बन गई है मेरे तन में,
भक्ति के पुष्प महके...।।1।।

आओ रे भक्तों आओ, गंगा में तुम नहालो,
श्रीराम को मना के, श्री गंगाराम पालो -2,
अंतर को शुद्ध करलो, दर्शन मिलेंगे मन में,
भक्ति के पुष्प महके ... ।।2।।

भक्तों की भावना ने, झुंझनूं यहाँ बनाया,
भक्तों ने आज मिलकर, बाबा को है सजाया-2,
बाबा की नजर उतारो, आओ चले शरण में,
भक्ति के पुष्प महके... ।।3।।

।।श्री भक्तशिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - मेरा दिल ये पुकारे ...)

हे देवकीनन्दन आवो, हमें सत् की राह दिखावो,
तुम हो बाबाजी के दास, पूरण कर दो मेरी आश।

देख भक्ति तेरी, आसमान झुक गया - झुक गया,
तप त्याग देखके, सूर्य भी रूक गया - रूक गया,
तेरा सांचा था बलिदान, कैसे दे दिया प्रमाण,
वो राज हमें बतलावो ... ।।१।।

जिसे तेरी कृपा, थोड़ी सी मिल गई - मिल गई,
फिर मांझी बिना, उसकी नाव चल गई - चल गई,
हमें दे दो ना शक्ति, कर लें थोड़ी सी भक्ति,
अब अपने गले लगावो ... ।।२।।

अब दिल में है क्या, मैं तुझे क्या कहूं - क्या कहूं,
बस तुम्हारे चरण, में सदा, मैं रहूं - मैं रहूं,
ये है 'राधे' की फरियाद, हमको देने आशीर्वाद,
तुम फिर से हाथ उठावो ... ।।३।।

भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन, परमभक्त कहलाये।
बाबा गंगाराम प्रभु की, अमरध्वजा फहराये।।

।।श्री भक्तशिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - ओ जाने वाले हो सके तो...)

भक्तों में हो शिरो मणि ये जग ने माना।
हे देवकीनन्दन हमें तुम भूल न जाना।।

सपने में गंगाराम ने आदेश जो सुनाया,
तुमने दिया था वचन वो तुमने ही था निभाया,
बाबा के श्री चरण, में तेरा है ठिकाना ।।१।।

संकट के बादलों ने चहूं ओर से था घेरा,
अपने पराये हो गये दुनिया ने मुंह को फेरा,
युग-युग तलक ये त्याग गायेगा जमाना।।२।।

निर्मोह की लगन थी वो तप त्याग की दीक्षा,
लेटे थे तुम चिता पे देने सत्य की परीक्षा,
आशीष का वो हाथ तुम फिर से उठाना।।३।।

वो मंत्र हमें भी मिले जो, था तुम्हारा प्यारा,
श्री गंगाराम नाम ही था बस तेरा सहारा,
भक्ति का तत्व ज्ञान हमें भी सिखाना।।४।।

।।श्री भक्तशिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - उड़ जा काले, कावां - गदर)

जागो जागो देवकीनन्दन सबकी किस्मत जागे,
आपके आशीर्वाद बिना सब सूना-सूना लागे,
कौन सा मंत्र पढूं मैं फिर से तुम धरती पर आओ,
तूफानों ने हमको घेरा, आकर हमें बचाओ,
कि इक बार आ जाओ, दरश दिखा जाओ

जिस दिन त्यागी थी तुमने मांटी की नश्वर काया,
जलती चिता से हाथ उठाकर चमत्कार दिखलाया,
वैसा ही कोई चमत्कार हे भक्त हमें दिखलाओ ।।१।।

आशीर्वाद दिवस पर हमने आपकी ज्योत जगाई,
मात-पिता हो आप हमारे, आप हमारे सांई,
हम भक्तों का कष्ट हरो, अब अपना फर्ज निभाओ।।२।।

अब के आशीर्वाद दिवस पर ये ही दे दो स्वामी,
सत्य धर्म में डटे रहें हम, सुन लो अन्तर्यामी,
हे 'राजेन्द्र' क्यों मेरी बारी इतनी देर लगाओ।।३।।

।।श्री भक्तशिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - कौन बनेगा करोड़पत्ति ...)

प्रण के खातिर जिसने सब कुछ त्याग दिया इक बार में।
भक्त शिरोमणि जैसा भक्त कोई दूजा ना संसार में।।

बाबा गंगाराम की सेवा, करने को वो आया था,
विष्णु रूप में बाबा गंगाराम को, जिसने ध्याया था,
पंचदेव मंदिर बनवाया परम प्रभु के प्यार में ।।१।।

पंचतत्व की काया में वो, पंचदेव का साधक था,
सहजपुरूष वो महामानव, आराध्य का वो आराधक था,
सहज दिया आशीष चिता से सहज रहा व्यवहार में।।२।।

गंगापुत्र वो देवकीनन्दन, गायत्री का स्वामी है,
अन्तरव्यथा सहज पहचाने, सचमुच अन्तर्यामी है,
गायत्री की सुन पुकार प्रगटा गंगा की धार में ।।३।।

छोड़ गया संसार वो योगी, योग ही जिसकी माया थी,
राजा था 'राजेन्द्र' सदा वो, पर योगी की काया थी,
ये न समझना छोड़ गया वो हमें बीच मंझधार में ।।४।।

।।श्री भक्तशिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - तुझे सूरज कहूं या चन्दा...)

हे भक्त शिरोमणि तुमने, भक्ति का दीप जलाया,
तेरे रोम-रोम में बाबा, का पावन मंत्र समाया ।टेर।।

बाबा की आज्ञा पाकर, मन्दिर निर्माण कराए,
श्री पंचदेव मन्दिर ज्यूं, बैकुण्ठ धरा पर लाये,
भक्ति के रंग में रचकर, भक्तों को मार्ग दिखाया,
तेरे रोम ... ।।१।।

तप त्याग भक्ति की तूने, त्रिवेणी धार बहाई,
बाबा की पावन महिमा, जन-जन तक है पहुँचाई,
सत-मार्ग पे चलकर अपना, जीवन आदर्श बनाया,
तेरे रोम ... ।।२।।

जब महाप्रयाण किया तो, एक चमत्कार दिखलाया,
आशीष दिया जन-जन को, बाबा की थी ये माया,
जिसने भी शीश झुकाया, वो भक्त का आशीष पाया,
तेरे रोम ... ।।३।।

बाबा के श्री चरणों में, अपना तन-मन-धन वारा,
तेरा आत्म-समर्पण ऐसा, हर युग से भी है न्यारा,
किरपा हुई 'राजू' पर ये, जो भक्त की गाथा गाया,
तेरे रोम... ।।४।।

।।श्री भक्तशिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - जय श्री गंगाराम कैसेट ...)

कोई नहीं, कोई नहीं थारै जिसो कोई नहीं,
थारो भक्त शिरोमणि नाम, थारै जिसो कोई नहीं,
भक्ति का सागर हो, थे भक्त नागर हो,
थारा आराध्य श्री गंगाराम, थारै जिसो कोई नहीं।।

जीवन थे थारो समर्पित कर्यो है, बाबा की करकै आराधना,
बाबा कै चरणां मं ले ली समाधि, पूरण हुई थारी साधना,
थे सच्चा साधक हो, सच्चा आराधक हो।।थारा आराध्य...।।

धोरां मं जलम्या थे, धोरां मं पनप्या थे, धोरां मं थारी समाधि,
जलती चिता सूं आशीष देकर, मेटी थे भगतां की व्याधि
थे पालनहारा हो, भवजल किनारा हो।।थारा आराध्य...।।

बाबा कै चरणां नै पूजां सदा म्हें, हे भक्त थारै ही सेती,
बाबा कै मन्दिर मं ज्योति जगै जद हरखै समाधि की रेती,
ज्योति जगाओ जी, मारग दिखाओ जी।।थारा आराध्य...।।

गायत्री मंत्रा सै पूजां म्हें थानै, थे म्हारी शक्ति बढाओं,
'राजेन्द्र' आयो शरण मं तिहारी, अन्तर मं भक्ति जगाओ,
म्हें पुत्र थारा, थे तात म्हारा।।थारा आराध्य...।।

।।श्री भक्तशिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - तोड़ देई गढ लंका ...)

बजा दिया है डंका, आहुति दे निज प्राण की,
भक्त शिरोमणि नाम की, जय बोलो,
भक्त और भगवान की, जय बोलो... ।टेर।।

बाबा गंगाराम देव के, भक्त हुए बलकारी,
भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन, नाम कमाया भारी,
त्याग तपस्या संग भक्ति की, कैसी धार बहाये,
हरिश्चन्द्र सा त्याग देखकर, देव सभी हर्षाये,
सत की जोत जगाई, पाई पदवी कल्याण की।।१।।

त्रेता में जब दुष्ट दलन को, राम धरा पर आये,
हनुमान संग में आये और राम भक्त कहलाये,
कलियुग में बाबा के संग में, भक्त शिरोमणि आये,
तन मन धन से भक्ति करके, परम भक्त कहलाये,
मिटा देइ सब शंका, भगती करके भगवान की।।२।।

सत्य लोक की ज्योत दिखी, तब प्रभु का ध्यान लगाया,
बाबा-बाबा कहकर मुख से, तज दीनी निज काया,
चिता पे चढकर प्रभु भक्ति का, पावन दृश्य दिखाया,
उठा चिता से हाथ तुम्हारा, वर देता लहराया,
बालरूप दिखलाया, ये बातें है परमान की।।३।।

जहां पे कीर्त्तन हो बाबा का, भक्त शिरोमणि आते,
बाबा के भक्तों की नैया पल में पार लगाते,
भक्ति की महिमा है भारी, वेद भेद नहीं पाते,
भगतों की भगती के आगे, भगवन भी झुक जाते,
महिमा वरणी न जाये, उस पूरण ब्रह्म निधान की।।४।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - गोरा - गोरा ...)

भक्तां न देखो भगवान मिल जावै है,
भक्त शिरोमणि चमत्कार दिखलावै है,
देवकीनन्दन आशीष दिवस मनावो,
सब भक्त शिरोमणि चरणां शीश नवावो ।टेर।।

बाबा गंगाराम की भक्ति देवकीनन्दन पाई,
देखो भक्त में बाबा गंगाराम की शक्ति आई,
जलती चिता से हाथ उठाया, आशीष भक्त हजारों पाया,
भगवान भक्त की महिमा सब मिल गावो।।१।।

राम भक्त हनुमान की महिमा तीन लोक ही गावै,
गंगाराम के भक्त देवकी, शिरोमणि कहलावै,
कैसो करग्यो चमत्कार, दुनिया करती नमस्कार,
आशीर्वाद दिवस है, उत्सव आज मनावो।।२।।

तेज पुञ्ज चमके धरती पर नाम देवकीनन्दन,
बाबा गंगाराम भक्त की करो आरती वन्दन,
घर-घर आज जलाओ दीप, गावो-गावो मंगल गीत,
आशीर्वाद दिवस में आशीष सब कोई पावो।।३।।

।।श्री भक्तशिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - कसमें वादे प्यार वफा ...)

बाबा गंगाराम प्रभु ये, कैसा वचन सुनाया है,
धाम तेरा कैसे बनवाऊँ, नहीं समझ में आया है ।टेर।।

हे दीनों के नाथ दयानिधि, ये दुनिया अज्ञानी है,
कोई मुझे पागल बतलाये, कोई कहे अभिमानी है,
पग-पग पर ··· काँटे मिलते हैं, साथ नहीं कोई आया है।।
बाबा गंगाराम...।।१।।

नई तुम्हारी लीला बाबा, घर-घर चर्चा है तेरी,
बड़े-बड़े विद्वान जगत में, कौन सुनेगा बात मेरी,
तेज तुम्हारा ··· कौन सम्भाले, दिल मेरा घबराया है।।
बाबा गंगाराम... ।।२।।

बोले बाबा सुनो देवकी, ये सब मेरी माया है,
दुनियाँ पीछे झुक जायेगी, ज्ञान समझ जब आया है,
सिर्फ जरा तू ··· हाथ बढा दे, सब कुछ रचा रचाया है।।
बाबा गंगाराम... ।।३।।

तब सेवक ने धर्म पताका, निज हाथों में थाम लिया,
नवयुग का इतिहास बनाया, मन्दिर का निर्माण किया,
पंचदेव की ··· अमर कहानी, सारा जमाना गाया है।।
बाबा गंगाराम... ।।४।।

।।श्री भक्तशिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - चांद चढ्यो गिगनार ...)

देवकीनन्दन भक्त सुजान, जिणको देव करै गुणगान,
साधना अमर हुई जी अमर हुई ।टेर।।

सहज भाव सै करी साधना, सहज तज्यो संसार,
चमत्कार जद हुयो चिता पै, गूंजी जै जैकार,
शीश सै निकली जल की धार, भक्त की भक्ति हुई साकार।।
साधना...।।१।।

अग्निदेव की गोद में सोकर, बालरूप दर्शायो,
बालरूप में विदा हुयो जो, बालरूप में आयो,
चिता में जली या नश्वर देह, प्रभु सै जाकर मिल्या विदेह।।
साधना...।।२।।

जिण हाथां सै गंगाराम की, धर्म ध्वजा फहराई,
उण हाथां नै बाँध सकै या, किण में शक्ति समाई,
चिता सै निकल्यो दाहिनो हाथ, राखी धर्म पत्नी की बात।।
साधना...।।३।।

धन्य-धन्य झुंझनूं की धरती, जिण पर बणी समाधि,
भक्त और भगवान हरै, अपणै भगतां री व्याधि,
धन-२ बाबा गंगाराम, जिणकै चरण में च्यारूं धाम।।
साधना...।।४।।

गायत्री की सौरभ फैली, देव करै गुणगान,
थारा टाबर थारै खातिर, छोड्यो सकल जहान,
भक्त थारो भक्त बण्यो 'राजेन्द्र' धर्म की रक्षा करो धर्मेन्द्र।।
साधना... ।।५।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - भावना की ज्योत को जगाके देखले ...)

बाबा गंगाराम को मनाके देखलो,
जो मांगोगे मिलेगा आजमा के देखलो
बस एक बार झोली को फैला के देखलो,
जो मांगोगे मिलेगा आजमा के देखलो।

इस जग के कण-कण में सब उसकी माया है
ये जिसने भी है समझा, उसी ने पाया है
होता हर जगह एहसास उनका, सच्चे विश्वास में निवास उनका
एक बार झुंझुनू में जाके देखलो, जो मांगोगे...

हम तो है दीन अनाथ ये दीनानाथ है
हम सबकी जीवन नैया इसी के हाथ है
मांझी भी है और किनारा भी ये, हम जैसों का अब सहारा भी ये
हाले दिल तू अपना सुनाके देख लो, जो मांगोगे...

गंगा सम पावन है ये तो भवतारण है
संग में सुत देवकीनंदन दुखों का निवारण है
फिर से राम के संग हनुमान आए है, करने देखो जग का कल्याण आए है
कहता 'नवीन' सर झुका के देख लो, जो मांगोगे...

।।श्री भक्तशिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - धमाल ...)

बेगा चालो झुंझनूं धाम गंगाराम बुलायो है।
आशीर्वाद मिलैगो उत्सव आज मनायो है।टेर।।

जब - जब कष्ट पड़ै भगतां पै, तब - तब जन्म लियो भगवान,
गंगाराम कै रूप में विष्णु दरश दिखायो है ।।१।।

राम भक्त हनुमान की जैंया, देवकीनन्दन भक्त हुआ,
भक्ति सै शक्ति मिल जावै यूं समझायो है।।२।।

जो भी थारै द्वार पे आवै, मन चाया फल पावैजी,
भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन सत दिखलायो है।।३।।

राम भजन सै कष्ट मिटै, और गंगा नहायां पाप कटै,
'मारवाल-सोनी' मिल भगतों भेद बतायो है ।।४।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - देना हो तो दीजिये ...)

ये सारी दुनिया देखी, देखे लाखों दरबार,
बाबा गंगाराम सा, मिला नहीं दातार।

उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम चहुँ दिश इसके चर्चे है,
बाबा गंगाराम दयालू, देता पल में पर्चे है,
बस एक नजर जो फेरे, जीवन में आए बहार।।१।।

पंचदेव दरबार की महिमा, तीनों लोक ही कहते हैं,
बाबा के संग लक्ष्मी दुर्गा, शिव, बजरंगी रहते हैं,
है पांचों देव निराले, अद्भुत इनकी सरकार ।।२।।

भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन, लगा समाधि बैठे हैं,
पंचदेव मन्दिर के कण-कण, उनकी गाथा कहते हैं,
उस पावन रज को अपने, सिर रख लेना एक बार।।३।।

बाबा गंगाराम हुये हैं, विष्णु के अवतारी।
धाम झुंझनूं दर्शन करने, आती दुनिया सारी।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - कान्हा रे कान्हा ...)

आया जग का पालनहार-देखो जी देखो,
ये है विष्णु का अवतार - देखो जी देखो,
देखो जी देखो - देखो जी देखो।।

जिसको सांची लगन लगी वो इसका हुआ दिवाना,
बाबा भी ऐसे भक्तों को भूले ना अपनाना,
ये है पंचदेव सरकार - देखोजी देखो...।।१।।

बहुत निराले दिलवाले हैं गंगाराम हमारे,
चाहे दुख हो चाहे सुख हो दिल इनको ही पुकारे,
लागा झुंझनूं में दरबार-देखोजी देखो... ।।२।।

भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन इनके भक्त निराले,
छोड़ के जग के गोरखधन्धे इनकी लगन लगाले,
करता भव से बेड़ा पार - देखोजी देखो ... ।।३।।

जो आता इसकी चौखट पर होते वारे न्यारे,
'चोखानी' कहे बाबा तो भक्तों के काज संवारे,
हो रही जग में जै-जैकार, - देखोजी देखो...।।४।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - दिल लूटने वाले ...)

दरबार सजा है बाबा का, कैसी ये सुहानी बेला है।

दिन आशीर्वाद का आया है, सब भक्तों को बुलवाया है,
बाबा भी आने वाले है, कैसी ये सुहानी बेला है ।।१।।

श्रीराम की नगरी अयोध्या है, श्रीकृष्ण की नगरी मथुरा है,
गंगाराम की नगरी है झुंझनूं, कैसी ये सुहानी बेला है ।।२।।

दुर्गा बजरंगी बायें है, तो शंकर लक्ष्मी दायें है,
इन बीच में बाबा बैठे हैं, कैसी ये सुहानी बेला है।।३।।

हमको सच्चा दरबार मिला, सुख चैन भी अपरम्पार मिला,
भक्तों को इनका प्यार मिला, कैसी ये सुहानी बेला है ।।४।।

इस कलियुग के कलिमलहारी, बाबा का नित नाम जपो।
पंचदेव के मध्य विराजे, बाबा गंगाराम भजो।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - मणिहारी का वेष ...)

इस कलियुग में देव ऐसा आया,
जिसने सबको दिवाना बनाया ।।टेर।।

जिसमें गंगा है मिली राम नाम भी मिला,
इसे जपने से सबको सहारा मिला,
गंगाराम नाम भक्तों को भाया।।१।।

बाबा सावन की दशमी को प्रगटे यहाँ,
धन्य मरूधर हुई, धन्य सारा जहाँ,
धाम झुंझनूं नगर को बनाया।।२।।

बाबा प्यारा तुम्हारा ये दरबार है,
दुर्गा, लक्ष्मी, कपि, शिव परिवार है,
पंचदेवों ने जग को लुभाया ।।३।।

देवकी भक्त ने जो करिश्मा किया,
तेरी भक्ति की शक्ति का परिचय दिया,
जग में भक्ति का डंका बजाया ।।४।।

देवलोक से चलकर आये विष्णु के अवतारी,
पंचदेव दरबार लगाया, जग के पालनहारी,
गांव-गांव और गली-गली में, धूम मची है भारी,
जय-जय गंगाराम उचारे, ध्यावे दुनिया सारी।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - पंख होते तो उड़ ...)

गरूड़ पे चढ़ कर आए हैं, विष्णु के अवतार,
बाबा गंगाराम कहलाए रे ओ··· ।।टेर।।

सत्य की राह दिखाने की खातिर, धर्म ध्वजा फहराने की खातिर,
प्रेम दया और धर्म की बातें, जन-जन को समझाने की खातिर,
आप लिए अवतार, बाबा गंगाराम कहलाए रे ओ··· ।।१।।

धन्ध हुई है मरूधर सारी, हर्षित है लाखों नर-नारी,
आए है विष्णु अवतारी, सुध लेने को अब वे हमारी,
त्रिभुवन के करतार, बाबा गंगाराम कहलाए रे ओ··· ।।२।।

स्वारथ में सब अंधे पड़े है, मोह माया से जकड़े पड़े हैं,
धर्म धरा पर बंधे पड़े हैं, आज तुम्हारी शरणे पड़े हैं,
जग के पालनहार, बाबा गंगाराम कहलाए रे ओ··· ।।३।।

पंचदेव दरबार निराला, खुल जाए वहाँ किस्मत का ताला,
'महेश गिरधर', गुण तेरा गाये, मेहर करो बाबा झुंझनूंवाला,
भक्तों के आधार, बाबा गंगाराम कहलाए रे, ओ··· ।।४।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - रम्मैया वस्ता वैया ...)

चलो रे धाम चलो, झुंझनूं धाम चलो,
मैंने संकल्प लिया - २

मन करता मेरा, दिल कहता मेरा,
झुंझनूं नगरी में बाबा बसा लो मुझे-२
रोज दर्शन करूँ, तेरी सेवा करूँ,
अपनी भक्ति से मैं तो रिझाऊँ तुझे-२
मेरी मंजिल तुम्हीं हो, मेरी धड़कन तुम्हीं हो ।मैंने...।।१।।

विष्णु अवतार है, सच्चा दरबार है,
गंगाराम प्रभु तुमसा कोई नहीं - २
तू ही श्रीराम है, तू ही घनश्याम है,
तेरी महिमा कोई जान पाया नहीं-२
तू ही गंगा की धारा, तू ही भव का किनारा।मैंने...।।२।।

चाहे इससे सुनो, चाहे उससे सुनो,
तेरी महिमा के जग में है चर्चे बड़े-२
सूनी-सूनी डगर, ले लो आके खबर
बाबा हम भी तुम्हारी, शरण में पड़े-२
गले अपने लगालो, दास अपना बना लो।मैंने...।।३।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - तूने पायल है छनकाई ...)

घर-घर बाजे रे शहनाई,
गंगाराम जयन्ती आई - २,
लियो, पंचदेव अवतार, जगत में,
छाई है खुशियाँ अपार ।टेर।।

जन्म की बेला आई, दिलों में खुशियाँ छाई,
घड़ी ये शुभ है आई, वो आये हैं ···,
नाचे, सारे लोग लुगाई, बाँटे मेवे और मिठाई ।।१।।

धरा से पाप मिटाने, धरम का पाठ पढाने,
प्रीत की रीत सिखाने, वो आये हैं ···,
आई मंगल घड़ियाँ आई, खुशियाँ घर-घर में है छाई ।।२।।

घरों में थाल बजे है, कि रंग गुलाल उड़े है,
नगाड़े ढोल बजे है, वो आये हैं ···,
माता फूली नहीं समाई, पल-पल लैवे 'हर्ष' बलाई ।।३।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - क्या मिलिये ऐसे लोगों से ...)

सारा जीवन व्यर्थ बिताया, तुमको ना पहचान सका,
बाबा गंगाराम तुम्हारी, लीला को ना जान सका।।

गीताजी का वादा बाबा, तुमने खूब निभाया है,
जब-जब होई धरम की हानि, अवतारी बन आया है,
नर तन धरके जब भी आया, ये जग ना पहचान सका,
बाबा गंगाराम... ।।१।।

पिता पुत्र का नाता रचकर, जग को सच्चा ज्ञान दिया,
अजब तुम्हारी महिमा बाबा, भजते बेड़ा पार किया,
दीन दयालु परम कृपालु, तुम्हीं मित्र हो तुम्हीं सखा,
बाबा गंगाराम... ।।२।।

क्रोध न छूटा, मोह न छूटा, तेरा दामन छूट गया,
माया की दुनिया में फंसकर, तुमसे रिश्ता टूट गया,
अलख निरंजन, तेरे पग में 'विनय' भक्त का शीश झुका,
बाबा गंगाराम... ।।३।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - ओल्यूं ...)

गंगाराम सुजान बाबा गंगाराम सुजान,
झुंझनूं रै गढ़ मै जनम लियो, नर नारायण भगवान।।

पंचम देव सज्यो है थासूं पंचदेव दरबार,
लक्ष्मी जी दुर्गाजी हनुमत सागै शिव परिवार,
हे महाविष्णु अवतारी, दीज्यो म्हानै भी वरदान,
गंगाराम...।।१।।

ब्रह्म मुहूर्त मैं मन्दिर की शोभा लागै न्यारी,
इन्द्र थारा अभिषेक करण नै ल्यावै जल की झारी,
इन्द्राणी थारै भोग कै खातिर, त्यार करै पकवान
गंगाराम...।।२।।

पंक्षीड़ा वृक्षां पर बैठ्या थारी महिमा गावै,
लोग लुगायां पूजै मां गायत्री मन्त्र सुणावै,
धोरां पर नाचै मोर सुरंगा देव करै गुणगान,
गंगाराम... ।।३।।

'राजेन्द्र' है चारण थारो चरण कमल मैं राखो,
राम रसोई रूखी सूखी शब्द ब्रम्ह है चाखो,
म्हारी भाव सुमन री थाली रो थे राखीजो सम्मान,
गंगाराम...।।४।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - सूरज की गर्मी से ...)

झुंझुनूं की धरती पर, प्रगटे है कलयुग में, देवों के देव निराले,
विष्णु के अवतारी, भक्तों के हितकारी, मुझको शरण में बुलाले,
गंगाराम.......
गंगा के जैसे, पावन हो बाबा, श्री राम के जैसे प्यारे,
घर-घर में गूंजे, है तेरी ही वाणी, दिल से तुझे ही पुकारे-२
अंधियारे तूफां में अपने इन भक्तों को, तुम बिन कौन सम्भाले,
विष्णु के अवतारी....

देवकीनंदन है, तेरी ही छाया, भक्ति की शक्ति दिखाई,
माता गायत्री ने, भावों के सत् से ही, करूणा की टेर लगाई-२
अद्भुत दिखाई थी लीला चिता पे, प्रभु तेरे खेल निराले
विष्णु के अवतारी...

झुंझुनूं से निकली, जो ज्योति तुम्हारी, सारे जहां को जगाये,
सूरज की पहली, किरण करती वन्दन, मंदिर की ध्वज लहराए-२
धरती से अम्बर तक गूंजे है जैकारी, हमको भी अपना बनाले
विष्णु के अवतारी...

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - पांचो अंगुली नहीं बराबर ...)

त्रेता में श्री राम थे आए, द्वापर में घनश्यामजी।
अब तो इस कलियुग में भक्तों आए हैं गंगारामजी।।

राम है मर्यादा पुरूषोत्तम, नटवर तो घनश्याम है,
भक्तों हेतु हाजिर रहते बाबा गंगाराम है,
विष्णु अवतारी बन आए, बैठे झुंझनूं धामजी ।।१।।

राम के सेवक बजरंगी है, राम शरण में बैठे हैं,
कृष्ण के सेवक नरसी, मीरा और सुदामा कहते हैं,
बाबा गंगाराम के सेवक, देवकीनन्दन नाम जी।।२।।

दशों दिशाओं में गूंजेगा, अब तो एक ही नाम है,
सबकी इच्छा पूरी करते, बाबा गंगाराम है,
'संजय-नवीन' ने किरपा पाई, बाबा गंगाराम की।।३।।

पंचदेव मन्दिर की शोभा, मुख से वरणी न जाये।
बाबा गंगाराम के दर्शन, जीवन सफल बनाये।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - घूमर ...)

म्हारा भाग जगाया थे तो बाबा गंगाराम,
आज पधार्‌या म्हारे आंगणिये - ओ देवा-२

आज घणो ही शुभ दिन आयो, आंगणिये थे आया-२
म्हारै मन मं हरख समायो, म्हानै दरश दिखाया-२
म्हे तो हिलमिल कर घूमर घालां, बाबा गंगाराम
आज पधार्‌या म्हारै...।।१।।

चांदी की चौकी ले आया, बन्दनवार बन्धाया-२
घणे मान सूं गंगाजल ले थारा चरण पखार्‌या-२
थारै चरणां म वारी जावां, बाबा गंगाराम
आज पधार्‌या म्हारै...।।२।।

बाबा थारो रूप सुहाणो, म्हानै प्यारो लागै-२
पंचदेव दरबार की महिमा, गावां सगला सागै-२
म्हारै हिवड़ै समाया थे तो, बाबा गंगाराम
आज पधार्‌या म्हारै... ।।३।।

देवकीनन्दन भक्त हा ठाडा, थारी किरपा पाया-२
कहवै 'रवि' थारी, भक्ति करके, जग मं नाम कमाया-२
पावै 'संजय-नवीन' भी थारी किरपा गंगाराम
आज पधार्‌या म्हारै...।।४।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – यूं ही कोई मिल गया था ...)

मुझे दर्शन दे गया वो, कल रात सोते-सोते
फिर बीती रात मेरी, बाबा से बात होते-होते।।

मुझे याद है अभी भी, वो रात का नजारा,
वो सामने खड़े थे, आभास होते – होते ।।१।।

जैसे सामने ये मूरत, वैसी ही मैंने देखी,
मैं तो चरणों में पड़ा था, यूं निहाल होते – होते ।।२।।

वो गिले वो सारे शिकवे, जो जरा मैं उनसे कहता,
सब भूलते ही जाते, मुझे याद होते – होते ।।३।।

मुझको गले लगाया, फिर प्यार से वो बोले,
तू तो अब भी रो रहा है, मेरे पास होते – होते ।।४।।

जिसे जिन्दगी ने चाहा, और दिल से मैंने पूजा,
वो झलक दिखा गये वो, सुप्रभात होते-होते ।।५।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – तुम अगर साथ देने का ...)

गंगाराम कहो गंगाराम जपो,
कष्ट सारे तेरे प्राणी कट जायेंगे।
मेरे बाबा की किरपा जो तुझपे हुई,
दु:ख तेरी राह से दूर हट जायेंगे ।।टेर।।

जब पापो से धरती थर्राने लगी,
तब विष्णु को अवतार लेना पड़ा,
दुख के सागर में सृष्टि जब डूब गई,
तब स्वयं विष्णु को आके कहना पड़ा,
पंचदेव बना झुंझनूं नगरी में मैं,
मेरे दर्शन से काले मेघ छँट जायेंगे ।गंगाराम कहो...।।

देव, दानी, दयावान, दातार है,
दूजा ऐसा दयालु ना कोई देखा,
कष्ट भक्तों का ये दूर पल में करे,
ये बदल देता भक्तों की काली रेखा,
सोचना क्या शरण में चले आओ तुम,
काले दिन तेरे पल में ही कट जायेंगे ।गंगाराम कहो...।।

जब से भक्तों का पकड़ा है हाथ प्रभु,
तब से भक्तों की दुनिया बदलने लगी,
आँख अन्धों को, कोढ़ी को काया मिली,
बेसहारों की दुनिया सँवरने लगी,
किया निर्धन को धनवान पल में प्रभु,
अब 'कुमार' के दिन भी पलट जायेंगे ।गंगाराम कहो...।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – बड़ी देर भई नन्दलाला ...)

सिर मुकुट गले वनमाला, बाबा गंगाराम निराला,
झूथारामजी की आँख के तारे, माँ लक्ष्मी के लाला रे,
सिर मुकुट गले वनमाला... ।टेर।।

बाबा गंगाराम प्रभु तो, विष्णु के अवतारी हैं-२,
दीन-दुखी के साथी बाबा, भक्तों के हितकारी हैं-२,
जिसने जितना मांगा उसको, उतना ही दे डाला रे ।।१।।

भक्तशिरोमणि को सपने में, गीता का उपदेश दिया-२,
झुंझनूं धाम में मन्दिर बनवाने का तब आदेश दिया-२,
पंचदेव मन्दिर में विराजे, देव बड़ा ही आला रे।।२।।

निर्बल को शक्ति दे बाबा, निर्धन को धनवान किया-२,
सूना पलना हो जिस घर में, उस घर में सन्तान दिया-२,
'राधेमण्डल' बाबा ने, हर भक्त का संकट टाला रे ।।३।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – छलिया मेरा नाम ...)

चलो झुंझनूं धाम, ले बाबा का नाम,
वही मिलेंगे प्यारे तुमको बाबा गंगाराम ।टेर।।

झुंझनूं नगरी बड़ी है प्यारी बाबा वहाँ विराजे,
शिव, हनुमत और दुर्गा, लक्ष्मी, भक्त शिरोमणि साजे-२,
इनको करो प्रणाम, देते ये वरदान, वहीं मिलेंगे प्यारे...।।

सुनलो भक्तों गंगारामजी विष्णु के अवतारी,
मनसा पूरण करते सबकी ऐसे है दातारी-२
होते सबके काम, ले लो इनका नाम, वहीं मिलेंगे प्यारे...।।

खाली झोली लेकर जाये, भरकर ही वो आवे,
ऐसे है दु:खभंजन दाता गंगाराम कहावे-२
करो नहीं अभिमान, मांगो इनसे दान, वहीं मिलेंगे प्यारे...।।

पूरण हो उस भक्त के, सहज ही सारे काम।
एक बार मन से कहे, जय श्री गंगाराम।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - यारी हो गई यार से ...)

गूंज रहा है नाम तेरा गली-गली।
फहरती, है ध्वजा, सारे संसार में ।।टेर।।

गाँव-गाँव और गली - गली में, धूम मची भारी,
बाबा गंगाराम तुम्हीं हो, विष्णु अवतारी,
जग रही, ज्योत है, तेरे दरबार में ।गूंज रहा...।।१।।

त्रेता में तू राम कहाया, द्वापर में घनश्याम,
कलयुग में तू बनके आया, बाबा गंगाराम,
क्या कमी, है प्रभु, तेरे भंडार में।। गूंज रहा...।।२।।

दीन हीन दुखियों का बाबा, देता है तू साथ,
जो भी पकड़े पांव तुम्हारा, पकड़े उसका हाथ,
थामते, हो तुम्हीं, नाव मझधार में ।गूंज रहा...।।३।।

पावन नाम तुम्हारा बाबा, पावन तेरा धाम,
भक्तों के तो रोम-रोम में, बसे हो गंगाराम,
लुट गया, है 'रवि', बाबा तेरे प्यार में ।गूंज रहा...।।४।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - सूरज कब दूर गगन से ...)

है कलियुग का अवतारी, बाबा ये मंगलकारी,
ये पल में पार लगाये, दु:खियों को गले लगाये,
गंगाराम दयालू दानी है, बाबा ये बड़ा वरदानी है।टेर।।

अपने मन की बातें, बाबा से तुम बोलो,
होगा नया सबेरा, आंखों को तुम खोलो,
तुम बाबा को अपना लो, फिर जो चाहे करवालो,
गंगाराम दयालू...।।१।।

दीन, हीन, निर्बल की, बाबा लाज बचाये,
एक नजर जो फेरे, किस्मत ही खुल जाये,
ये बाबा झुंझनूंवाला, घर-घर में करे उजाला,
गंगाराम दयालू... ।।२।।

राम नाम की दौलत, है गंगा की धारा,
ले डुबकी जो निकले, उसको इसने तारा,
ये निकल न जाये मौका, रह जायेगा फिर धोखा,
गंगाराम दयालू...।।३।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - झुमका गिरा रे ...)

झुंझुनूं जास्यांजी, बाबाजी के दरबार मं ।टेर।।

झुंझुनूं जास्यां, दरशन पास्यां, बाबाजी न ध्यास्यां,
बाबा गंगाराम प्रभु कै, आगै शीश नवास्यां,
टाबरिया संग दर्शन करकै मन इच्छा फल पास्यां,
भर्‌या पड्या भण्डार देव का, झोली भर-भर लास्यां-२।झुंझनूं...

पंचदेव मन्दिर की शोभा, म्हानै लागै प्यारी,
ऊँचे-ऊँचे शिखरां ऊपर, ध्वजा फरूकै थारी,
दर्शन करनै बाबाजी का, आवै लोग लुगाई,
बाबो बैठ्यो परचा देवै, है मोटी सकलाई-२।झुंझनूं...

विष्णु का अवतार कुहावो, कलयुग का अवतारी,
युग-युग म अवतार लियो थे, जग का पालनहारी,
सपनों देकर धाम बनयो, फैली महिमा भारी,
बीच भवन मं आप विराजो, सूरत लागै प्यारी-२।झुंझनूं...

छोड़ जगत को गोरखधन्धो, क्यूँ जग म भरमावै,
दुनिया तो है रैन बसेरो, इक आवै इक जावै,
'नीलकण्ठ' जा चरण पकड़ क्यूं, दर दर ठोकर खावै,
जन्म-जन्म का पाप कटै जो, शरणै थारी आवै-२।झुंझनूं...

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - परदेसी-परदेसी ...)

दोहा : **कब आवोगे बाबा, ये विनती करूं मैं।**
मुझे अपनाओगे बाबा, ये आस करूं मैं ।।

नारायण - नारायण, कहो - कहो सुनेंगे प्रभु - २
ओ बाबा झुंझनूंवाले, तुमको है आना,
भक्त पुकारे सारे, भूल न जाना ।।टेर।।

गंगा जैसा नाम तेरा अति पावन है,
हमको लगती मूरत ये मनभावन है,
तेरे दर को छोड़ कहाँ हम जायेंगे,
हम तो तेरे दास तेरे गुण गायेंगे,
ओ बाबा झुंझनूंवाले... ।।१।।

और कहें क्या हम तेरे दीवाने है,
ये तुझपे है तू माने ना माने है,
हम तो हैं नादान तू घट-घट वासी है,
अजर-अमर अनमोल तू ही अविनाशी है,
ओ बाबा झुंझनूवाले...।।२।।

भक्तों ने जब-जब भी तुम्हें पुकारा है,
आये तुमने आकर दिया सहारा है,
'लहरी' लगन लगी है लाज बचावोगे,
मेरे घर भी खुशियां लेकर आओगे,
ओ बाबा झुंझनूंवाले...।।३।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - जहाँ डाल-डाल पे सोने ...)

हे बाबा गंगाराम प्रभु, तेरी महिमा है अति भारी,
तुझे ध्यावे दुनिया सारी ।टेर।।

तुम नारायण अवतार प्रभु, युग-युग में तुम ही आए,
कलियुग में ले अवतार तुम्हीं श्री गंगाराम कहाए-२,
दुखियों का हरते कष्ट सदा, हे दुखभंजन सुखकारी।।१।।

झुंझनूं में तेरा दिव्य धाम, तेरा दर्शन है अति पावन,
बहती है गंगाधार जहाँ, है दिव्य छटा मनभावन-२,
उस पुण्य धरा की रज हरती, भक्तों के संकट भारी।।२।।

जो जन करते सुमिरन तेरा, वो जीवन सफल बनाते,
जो नाम रटें पावन तेरा, उन्हें भव से पार लगाते-२,
गंगा और राम का संगम ये, तेरा नाम है मंगलकारी।।३।।

घनघोर अन्धेरा छाया है, मुझे दिखता नहीं किनारा,
तेरा कृपादृष्टि से हो जाए, मेरे जीवन में उजियारा-२,
है दास 'विजय' की अर्ज यही, पूरन हो आश हमारी।।४।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - अगर तेरी मोहब्बत का सहारा ...)

नजारा झुंझनूं वाले, तेरा इक बार हो जाता,
इशारा तेरी रहमत का, अगर इक बार हो जाता ।टेर।।

ये सूरज चांद और तारे, बन्धे हैं जिसके दामन में,
मनुज ऋषि देवता सारे, खिले है जिसके आंगन में,
ऐसे वैकुण्ठ वासी का, हमें दीदार हो जाता,
इशारा तेरी रहमत का...।।१।।

हकीकत है तेरे दर की, यहाँ पर गंगा बहती है,
तेरी शक्ति निराली है, यहाँ पर ज्योति जलती है,
बाबा की ज्योति का दर्शन, अगर इक बार हो जाता,
इशारा तेरी रहमत का...।।२।।

अगर प्रभु भूलकर आते, कहीं भगतों की महफिल में,
तो हम भी रोक लेते और, बिठा लेते उन्हें दिल में,
हमारे मन से चले जाना, उन्हें दुश्वार हो जाता,
इशारा तेरी रहमत का...।।३।।

'विजय' कहता कि ये नौका, है गंगाराम के कर में,
दया करते हैं बाबाजी, यही एक आश है दिल में,
लगा लेते जो सेवा में, हमें एतबार हो जाता,
इशारा तेरी रहमत का...।।४।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - कजरा मोहब्बत वाला, आँखो में ...)

सारे देवों में आला, बाबा तूं झुंझनूं वाला,
देव बड़े हो बलवान, धरते तुम्हारा हम ध्यान।
बाबा तूं है दिलवाला, जपते तुम्हारी माला,
देना हमें भी वरदान, धरते तुम्हारा हम ध्यान ।टेर।।

जगती का सिरजनहारा, विष्णु अवतार है तूं,
देवों में राम तू ही, गंगा की धार है तूं,
गीता पुराण गाये, वेदों का सार है तूं,
अम्बर में रहनेवाला, धरती पे जब तूं आया,
पाया न कोई पहचान, धरते...।।१।।

भगतों ने तुमको ध्याया, लेके अवतार आये,
पापों से मुक्ति देने, करने भवपार आये,
तेरे दरबार बाबा, सारा संसार आये,
दर पे तेरे जो आया, झोली भरके वो लाया,
निर्धन को करते धनवान, धरते...।।२।।

दूजा न देव कोई, कलयुग में तेरे जैसा,
ढूंढा पाया न हमने, अवतारी तेरे जैसा,
तूने भी देखा है क्या दुखियारी मेरे जैसा,
'सूरज' मना के हारा, अर्पण कर जीवन सारा,
अब तो बचाले आके आन, धरते...।।३।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - तेरे बिना श्याम हमारा नहीं कोई रे ...)

भगत शिरोमणी तो, भगती मं खो गया,
भगती मं खो गया जी, भगती मं खो गया।।भगत...

रामजी का सेवक तो, कहाया हनुमानजी,
बाबाजी का सेवक प्यारा, देवकी जी हो गया।।१।।

बाबा गंगारामजी नै, देवकी जी ध्याया था,
बाबाजी की भगति मांहि, अमर ही हो गया।।२।।

भगति की राह सबनै, ये ही तो दिखाया जी,
'रवि' कहवै भक्ति का, बीज जग मं बो गया।।३।।

तुम कलियुग के हनुमत हो, हे भक्त देवकीनन्दन।
हम भक्त सभी मिलकर के, करते तेरा अभिनन्दन।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - छोटी-छोटी गैया ...)

धन्य - धन्य थारो झुंझनूं धाम,
भक्त शिरोमणि थानै प्रणाम ।टेर।।

पंचदेव दरबार सुहाणो, जिनसे थारो रिश्तो पुरानो,
स्वप्नादेश को शुभ परिणाम। भक्त शिरोमणि...।।१।।

आशीष देवों जी भगतां नै भारी, सहभागिनी है गायत्री थारी,
शीश पे गंगा हृदय में राम। भक्त शिरोमणि...।।२।।

धोरां मं जनम्या थे धोरा मं सोया, रेशम की माटी चरण थारा धोया,
परचा सै परिचित हुयो जग तमाम। भक्त शिरोमणि...।।३।।

वंशज हाँ म्हें थारी वंशावली का, म्हें हाँ पुजारी थारी थली का,
फूल खिल्या आंगन निष्काम। भक्त शिरोमणि...।।४।।

राजेन्द्र चरणां मं धोक लगावै, भक्त शिरोमणि थानै मनावै,
सुयश मिले म्हानै मिले सुनाम। भक्त शिरोमणि...।।५।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - क्या मिलिये ऐसे लोगों से ...)

चमत्कार को नमस्कार तो सभी ने बारम्बार किया।
भक्त शिरोमणि बन करके, भक्तों का बेडा पार किया ।टेर।।

देवकीनन्दन को बाबा ने, सपने में आदेश दिया,
पंचदेव मन्दिर की प्रतिष्ठा, हेतु सुखद संदेश दिया,
तन-मन-धन जीवन देकर, सारा सपना साकार किया,
भक्त शिरोमणी...।।१।।

भौतिक माया मोह त्यागकर, चिन्तन में तल्लीन हुए,
त्याग तपस्यामय जीवन संग, भक्ति में लवलीन हुए,
है निर्वाण परमपद पाया, जब प्रयाण स्वीकार किया,
भक्त शिरोमणी...।।२।।

चिता से निकली दिव्य भुजा तो, भक्तों ने आशीष गही,
ब्रह्म रन्ध्र से पतित पावनी, निर्मल गंगाधार बही,
भक्तों ने विस्मित हो देखा, बालरूप था धार लिया,
भक्त शिरोमणी...।।३।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - बाबुल की दुआएं ...)

मेरे बाबा गंगाराम प्रभु, तेरा मंदिर कैसे बनाऊं मैं,
मैं हूँ निर्बल असहाय प्रभु, कैसे तेरा वचन निभाऊं मैं ।टेर।।

ये कैसी माया दिखाई प्रभु, मुझे कुछ न समझ में आया है,
कैसे सम्भलेगा तेज तेरा, ये सोच के दिल घबराया है,
मैं तो हूँ अकेला इस जग में, कैसे ये कदम बढाऊं मैं।
मैं हूँ...।।१।।

तुम हो दीनों के नाथ प्रभु, और ये दुनिया अज्ञानी है,
कोई पागल मुझको बतलाएं, कोई कहता मुझे अभिमानी है,
पथ में हैं लाखों शूल प्रभु, कैसे यहाँ फूल खिलाऊँ मैं।
मैं हूँ...।।२।।

मैं किससे कहूँ अपनी बातें, यहाँ सुनने वाला कोई नहीं,
जब से आदेश मिला मुझको, ये आँखें मेरी सोई नहीं,
ये दुनिया वाले क्या जानें, अब कैसे इन्हें समझाऊँ मैं।
मैं हूँ...।।३।।

तब आकर के बोले बाबा, सुनो देवकी सब मेरी माया है,
तुम अपने हाथ बढ़ाओ तो, यहाँ सब कुछ रचा रचाया है,
हे देवकी तुम ना घबराना, तेरा हरपल साथ निभाऊँ मैं।
मैं हूँ...।।४।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो ...)

भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन,
तुम्हारे चरणों में मेरा वन्दन ।टेर।।

तुम्हारी भक्ति ही मेरी शक्ति,
तुम्हीं हो जीवन तुम्हीं हो मुक्ति,
तुम्हीं हो दृष्टि का नेत्र अंजन ।।१।।

जो पंचतत्वों की है ये काया,
तू ने दिखाई इसी से माया,
किया था अग्नि ने अभिनन्दन ।।२।।

तुम्हीं हो भक्तों की भाव पूजा,
तुम्हारे जैसा कोई ना दूजा,
तुम्हीं हो देवों के देव नन्दन ।।३।।

शरण तेरी हमें राह दिखादो,
बाबा गंगाराम से हमें मिलादो,
'कुमार' चरणों का तेरे चंदन ।।४।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - म्हारी काया रंग चुनड़ी कै रंग चढग्यो ...)

भक्त शिरोमणि तो, मन्दिरयो बणाकै तरग्यो,
झुंझनूं रो नाम चारूं ओर करग्यो,
नाम करग्यो रे जग में नाम करग्यो ।।टेर।।

भगतां रो है लाडलो, बाबै रो सांचो लाल है,
सुपनै नै साकार करकै, करग्यो काम कमाल है,
धोरां री धरती मैं तीरथ धाम बनग्यो।झुंझनूं रो...।।१।।

देवकीनन्दन नाम है थारो, गाँव झुंझनूं प्यारो है,
भक्त और भगवान रो यो, जोड़ो सबस्यूँ न्यारो है,
अग्रवंश मं एक नयो इतिहास रचग्यो ।झुंझनूं रो...।।२।।

भक्ति थारी याद, हनुमान री करावै है,
त्याग थारो सुनकर, हरिश्चन्द्र याद आवै है,
बाबै री भक्ति में रोम-रोम रमग्यो ।झुंझनूं रो...।।३।।

चमत्कार भक्तां नै, जलती चिता म दिखलायो थो,
भगतां नै थे आशीर्वाद, देवण हाथ उठायो थो,
बालरूप बन सिरस्यूं गंगानीर बहग्यो ।झुंझनूं रो...।।४।।

बाबा री अगवानी करता, थे ही शोभा पावो हो,
भगतां री अर्जी बाबा स्यूं, थे ही पास करावो हो,
पंचदेव रो डंको चारूं कूंट बजग्यो ।झुंझनूं रो ...।।५।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - म्हारो बेड़ो पार लगा दिज्यो ...)

म्हाने भगती भाव सिखा दीज्यो, भगतां रा सरताज,
भगतां रा सरताज म्हारा भक्त शिरोमणि राज ।टेर।।

गंगारामजी का भक्त थे न्यारा, बैठ्या चरणां मं लागो प्यारा,
म्हानै बाबा सै मिलवा दीज्यो, भगतां रा सरताज,
म्हारा...।।१।।

थारी पहुँच भोत है भारी, एक अरज सुणो थे म्हारी,
म्हारी अरजी पास करा दीज्यो, भगतां रा सरताज,
म्हारा...।।२।।

म्हारै जग का घणां है बन्धन, थे जाणो देवकीनन्दन,
जीवन का जाल मिटा दीज्यो, भगतां रा सरताज,
म्हारा...।।३।।

सारै जीवन अलख जगाई, फिर पदवी ऊँची पाई,
म्हारो जीवन सफल बना दीज्यो, भगतां रा सरताज,
म्हारा...।।४।।

थे देखो म्हारै कानी, इब थारै सै के छानी,
म्हारा दुःखड़ा आय मिटा दीज्यो, भगतां रा सरताज,
म्हारा...।।५।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - सौ साल पहले ...)

बड़ा प्यारा नाम है, बाबा गंगाराम का - 2
राम भी है और गंगा इसी में ।।टेर।।

लगालो डुबकी गंगा में, तुम्हें भवपार जो जाना हो,
सुमिरलो राम नाम दिल से, अगर बाबा को पाना हो
मुक्ति के द्वार दोनों, मिलेंगे इसी में-२,
राम भी है .... ।।१।।

धरा पर जब-जब पाप बढा, यहाँ पर नारायण आये,
बने अब बाबा गंगाराम, तारने भक्तों को आये,
भक्तों के प्राण प्यारे, बसे हैं इसी में - २
राम भी है... ।।२।।

भाव के भूखे हैं बाबा, भावना दर्श कराती है,
प्रेम से बन्ध जाते बाबा, कि भक्ति इन्हें मिलाती है,
भक्ति और भावना का, संगम इसी में - २,
राम भी है... ।।३।।

झूठा प्रेम नहीं करना, कि बाबा दूर चले जाते,
दिवाने बनकर ढूँढो तो, कि बाबा पल में मिल जाते,
करले भरोसा बन्दे, सार है इसी में - २,
राम भी है... ।।४।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - तालरिया मगरिया रे ...)

नर नारायण रे बाबा श्री गंगारामजी,
लियो झुंझुनूं म अवतार मंगल गावो रे।टेर।।

भक्त परायण रे, बाबा श्री गंगारामजी,
गूंजे त्रिभुवन म जय जयकार...।। मंगल गावो रे ।।१।।

वैष्णव धर्मी रे, विष्णुजी नै पिछाणल्यो,
सांचो, पंचदेव दरबार... ।। मंगल गावो रे ।।२।।

तन पीताम्बर रे, केसरिया बागो चित हरे,
प्यारो, सौम्य सुहाणो सिणगार... ।। मंगल गावो रे ।।३।।

बाएं हनुमत रे, दुर्गाजी स्यामी श्री सजे,
साजै, सुन्दर शिव परिवार... ।। मंगल गावो रे ।।४।।

देव पधार्‌या रे, बण कर देवकी,
दीन्यो, सोक्यूं बाबाजी पै वार ... ।मंगल गावो रे।।५।।

मंत्र गायत्री रे, गूंजे रे चांरू कूंट मं,
जठे, सिमट रह्यो संसार... ।मंगल गावो रे।।६।।

बांटी बधाई रे, पिता श्री झूथारामजी,
देवै, 'राजेन्द्र' निजरां उतार... ।मंगल गावो रे।।७।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - छोटी-छोटी गैया ...)

थोड़ी-थोड़ी भक्ति, थोड़ा - थोड़ा प्यार,
कर लो बाबा से, बेड़ा हो जायेगा पार ।टेर।।

बाबा गंगाराम का, सजा दरबार,
कहते हैं इनको, विष्णु का अवतार ।।१।।

सांसे अनमोल, नहीं मिलती उधार,
सोचोजी सोचो, कुछ करके विचार ।।२।।

छोटी सी उमरिया, जीना दिन चार,
टूट जाएगा, इस जिन्दगी का तार ।।३।।

खोया है किनारा, टूटी पतवार,
डोल रही है नैया देखो मझधार ।।४।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - इस प्यार से मेरी तरफ ना देखो ...)

कोई बाबा गंगाराम को रिझाले,
गजब हो जाएगा ।टेर।।

दो काम करने से मुक्ति है प्राणी,
एक गंगा स्नान और दूजी राम वाणी,
फिर गंगा और राम को मिलाले,
गजब हो ... ।।१।।

पंचदेव बाबा की झांकी निहारो,
दुर्गा लक्ष्मी शिव संग, हनुमान प्यारो,
श्रद्धा से अपने सिर को झुकाले,
गजब हो... ।।२।।

देवकीनन्दन, भक्त हुवे भारी,
चरणों में बाबा के जिंदगी गुजारी,
माथे से उनकी रज को लगाले,
गजब हो... ।।३।।

बाबा को कहते हैं विष्णु अवतारी,
'मारवाल-सोनी' हैं जिनके पुजारी,
मंदिर में उनकी ज्योत जलाले,
गजब हो... ।।४।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - मेरा जूता है जापानी ...)

मेरा बाबा झुंझनूं वाला, निकला देवों में निराला,
मेरे बाबा गंगाराम, तेरी लीला है महान।।

पंचदेव प्रभु राम और गंगा की निर्मल धारा-२
ले डुबकी जो निकले इससे, बने सभी का प्यारा -२
तेरी शक्ति है महान, पाऊं मैं तुझसे वरदान।।
मेरे बाबा गंगाराम...।।१।।

निकल पड़ा मैं भवसागर में, तेरी आश लगाए-२
हे विष्णु अवतारी मेरे, विपदा पास न आए - २
तेरा भक्त हूं नादान, राखो मेरी आके आन।।
मेरे बाबा गंगाराम... ।।२।।

जगवालों के कई सहारे, मेरा सपना तू है - २
भटक न जाऊ राखो पत बस, मेरा अपना तू है - २
कहता 'हृदय' भक्त भगवान, दे दो चरणों में स्थान।।
मेरे बाबा गंगाराम... ।।३।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - अयोध्या करती है आह्वान ... रवीन्द्र जैन)

जहाँ में झुंझनूं है एक धाम,
विराजे जहाँ पे गंगाराम,
साथ सब देवों का सम्मान,
जय-जय श्री पञ्चदेव का धाम।।

भक्तों के प्यारे बाबा विष्णु अवतारी हो,
गरूड़ सवारी बाबा आप चक्रधारी हो,
प्रेमियों के प्यारे बाबा प्रेम के पुजारी हो,
मेरा करो कल्याण... ।।१।।

गंगाराम बोलो और गंगा में नहालो जी,
राम नाम लेके मनचाहा फल पावोजी,
मानो मेरी बात ये बात नहीं टालोजी,
हृदय से करो प्रणाम... ।।२।।

गंगाराम कहके मन शुद्ध हो जाता है,
संकट का मार्ग अवरूद्ध हो जाता है,
दीखे जो सरल वो प्रबुद्ध हो जाता है,
नाम है ये गुणगान... ।।३।।

बाबा गंगाराम पंचदेव में विराजे है,
संग शिव दुर्गा हनुमत विराजे हैं,
लक्ष्मीजी बैठी भण्डार लुटावै है,
लूटो 'कुमार' ये नाम ... ।।४।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – मुझको ये तेरी बेवफाई ...)

बाबा गंगाराम सा दयालू नहीं पायेगा,
नैया तेरी पल में····-२, वो पार लगायेगा... ।टेर।।

प्रेम से पुकार प्यारे, बाबा दौड़ा आयेगा।
बिगड़े वो सारे तेरे काम बनायेगा।
ज्योति जगाले····-२, तू भी जान जायेगा... ।।१।।

कितनों की नैया बाबा, पार लगाए हैं।
शरण जो आए उन्हें अपना बनाए हैं।
गंगाराम रटले····-२, काम ये ही आयेगा... ।।२।।

सौंप दे पतवार अब, बाबा गंगाराम को।
घट में बसाले बस उनके ही नाम को।
उनकी कृपा का····-२, तू भी फल पायेगा... ।।३।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – छुप-छुप खड़े हो जरूर कोई ...)

बाबा गंगाराम तेरी महिमा अपार है,
भगतों के लिए तूने लिया अवतार है ।टेर।।

झुंझनूं में धाम तेरा बड़ा ही निराला है,
करे प्रतिपाल बाबा जग रखवाला है,
बड़ा है दातार बाबा, बड़ा दिलदार है।।
भगतों के लिए ... ।।१।।

युग-युग में प्रभु तुम ही तो आये हो,
राम-श्याम कभी गंगाराम कहाये हो,
नाम है अनेक तेरे, रूप भी हजार हैं।।
भगतों के लिए... ।।२।।

भोले बाबा संग तेरे अंजनी का लाल है,
लक्ष्मी विराजे संग दुर्गा विशाल है,
देवों के संग तेरा, लगा दरबार है।।
भगतों के लिए... ।।३।।

महिमा है भारी तेरी तू ही करतार है,
ज्योत सवाई तेरी तू ही भरतार है,
जीवन का सार तू ही, तू ही पतवार है।।
भगतों के लिए... ।।४।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – उमराव ...)

आयो सावण सोवणो, सज्यो थारो सिणगार,
हिण्डो घाल्यो जोर को, फूल कदम्ब की डार,
बाबोजी म्हारै हिण्डै आप विराजो म्हारा राज,
ओ गंगारामजी ··· ओ म्हारा राज।।

घिर – घिर आवै बादली, कालजियै री कोर,
झिर – मिर, झिर – मिर मेह पड़ै धोरां नाचै मोर,
बाबाजी म्हारै ... ।।१।।

थानै देखां हिण्डता, हिव हिचकोला खाय,
पंचदेव क आंगणै, हिण्डो दियो घलाय,
बाबाजी म्हारै... ।।२।।

महादेव परिवार की, अजब निराली शान,
लक्ष्मीजी, अम्बा सजे, सजे वीर हनुमान,
बाबाजी म्हारै... ।।३।।

भक्त शिरोमणि गोद में, बैठ्या चतुर सुजान,
थे पूरण परमात्मा, राखो म्हारी शान,
बाबाजी म्हारै ... ।।४।।

भक्तां नै बांधै प्रभु, थारै प्रेम की डोर,
'राजेन्द्र' अर्जी करै, होकै आत्मविभोर,
बाबाजी म्हारै ... ।।५।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – मोरियो आछो बोल्यो रे ढलती रात ने...)

बाबाजी आज पधारो म्हारै, आंगणै-आंगणै-आंगणै,
ओ थारी खूब करां मनुहार बाबाजी, आज पधारो म्हारै आंगणै।।

बाबाजी मन्दिर बण्यो है थारो, जोरको-जोरको-जोरको,
कोई गाँव झुंझनूं धाम बाबाजी, आज पधारो... ।।१।।

बाबाजी पंचदेवा कै संग आइया-आइया-आइया,
कोई थानै तो ध्यावै है गंगाराम बाबाजी, आज पधारो... ।।२।।

बाबाजी यात्री तो आवे थारे मोकला-मोकला-मोकला,
ओ ज्यांरी पूरो थे मनड़री आश बाबाजी, आज पधारो... ।।३।।

बाबाजी भोग लगे है थारे चूरमो-चूरमो-चूरमो,
ओ कोई हरिये मूंगा री दाल बाबाजी, आज पधारो... ।।४।।

बाबाजी जात जडूलारा, आव जातरी-जातरी-जातरी,
ओ ज्यांकै बालकियां री करो रिछपाल बाबाजी, आज पधारो... ।।५।।

बाबाजी 'भामा गजानन्द' थारो दास है – दास है – दास है,
ओ कोई सुख सम्पत्ति दरसाय बाबाजी, आज पधारो... ।।६।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – प्यार दिवाना होता है ...)

बाबा गंगाराम हमारी, प्रीत पुरानी है,
जन्म – जन्म की प्यास हृदय की आज बुझानी है।।

प्यारा – प्यारा लगता है, तेरा दरबार,
सूना-सूना लगता है, सारा संसार,
सूने से जीवन में, तेरी ज्योती जगानी है... ।जन्म।।

कलिकाल में हो प्रगटे, घट – घट वासी,
पंचदेव नाथ हो तुम, ओ अविनाशी,
तेरी मूरत मन मन्दिर में, आज बसानी है ... ।जन्म।।

सपना भगत को जब, तूने दिखाया,
झुंझनूं में जाके तेरा, धाम बनाया,
बाबा तेरे मन्दिर की हर, बात निराली है... ।जन्म।।

तुम्हें क्या सुनाऊँ मैं, अपनी कहानी,
डूब रही है मेरी, नाव पुरानी,
विरह व्यथा की बात 'विनय' को, आज बतानी है।जन्म।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – गाड़ीवाले मनै बठाले ...)

बाबा गंगाराम नाम से गूंज उठा संसार,
घर – घर ज्योति जले ।।टेर।।

सूरज चमका कलियुग में, घर – घर में प्रकाश करे,
प्रेम मगन हो जो भजता, पाप – ताप सब नाश करे,
तेज निराला तम को हर ले, कर दे जग उजियार,
घर-घर... ।।१।।

विष्णु के अवतारी हो, अजब तुम्हारी माया है,
भेद तुम्हारी शक्ति का, जान नहीं कोई पाया है,
और नहीं है इस कलियुग में, तुम जैसा दातार,
घर-घर... ।।२।।

बाबा झुंझनूंवाला वो, सबका भाग्य विधाता है,
कठिन परीक्षा लेकर के, भगतों को अपनाता है,
सत्य मार्ग की राह चलाकर, देता जनम सुधार,
घर – घर... ।।३।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – जग में सुन्दर है दो नाम ...)

बन्दे भजले पावन नाम, प्रगटे बाबा गंगाराम ।टेर।।

परम आत्मा युग युग आती, सगुण रूप धर ताप मिटाती,
दिव्य रूप विष्णु अवतारी, अबके गंगाराम।बन्दे... ।।१।।

राक्षस कुल संहारे रघुवर, दुष्ट कंस को मारे गिरधर,
प्रेम बढावे मार असुर को, मन में गंगाराम।बन्दे...।।२।।

हंस सवारी ब्रह्मा आवे, नन्दी शिव को पीठ चढावे,
गरूड़ सवारी बैठ विचरते, बाबा गंगाराम।बन्दे...।।३।।

पीत वसन सिर मुकुट विराजे, रूप मनोहर मन को राजे,
बन्दीजन जयकार उचारे, नगर झुंझनूं धाम।बन्दे...।।४।।

दीन बन्धु दुःख हरता ऐसे, दिनकर हरता तम को जैसे,
घट-घट वासी, आनन्द प्रकाशी, बाबा सुख के धाम।बन्दे...।।५।।

पंचदेव दरबार जहाँ पे, न्याय तराजू तुले वहाँ पे,
फरियादी की फरियाद वहाँ पे, सुनते गंगाराम।बन्दे...।।६।।

मन को गंगाराम में खोले, देखो मूरत घट में बोले,
भाव वन्दना करता 'नथमल' बाबा तुम्हें प्रणाम।बन्दे...।।७।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज – दुनिया बनाने वाले क्या...)

ओ बाबा झुंझनूंवाले, क्या तेरे मन में समाई,
तूने काहे को देर लगाई····-२ ।।टेर।।

सारे देवों में तू है, देव निराला,
मन की पूरा दे बाबा, झुंझनू वाला,
भक्तों पे रहमत दिखानी पड़ेगी,
नजरों से नजरें, मिलानी पड़ेगी,
धीरज ये छूटा जाये, कैसे सहेंगे जुदाई···,
तूने काहे को... ।।१।।

कलियों को चुनकर, हार बनाया,
श्रद्धा के भावों को, इसमें सजाया,
आशा के फूलों को, इसमें संजोया,
जीवन की डोरी में, इसको पिरोया,
करते हैं अर्पण तुझको, पूजन की रीत निभाई···,
तूने काहे को... ।।२।।

कलियुग में प्रगटे हो, हमने सुना है,
झुंझनू में तेरा, धाम बना है,
यादों की उल्फत को, सहते रहेंगे,
दावा न छोड़ेंगे, कहते रहेंगे,
कर देना पूरण बाबा, 'सूरज' की कविताई···,
तूने काहे को ... ।।३।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - रूक जा ओ जाने वाली ...)

शरणा है बाबा गंगाराम का,
बाबा बिना जीना किस काम का ।।टेर।।

घनघोर अन्धेरी थी, ज्वाला एक प्रगटी थी,
धरती के अन्दर से, मूरत तेरी प्रगटी थी,
सपना, दिखाया तूने धाम का, बाबा बिना ... ।।१।।

सेवक को जब बाबा, तूने दरश दिखाया था,
झुंझनूं के उपवन में, तेरा धाम बनाया था,
रास्ता, दिखाया तेरे नाम का, बाबा बिना ... ।।२।।

तेरे शीश मुकुट सोहे, तेरी मूरत मुख बोले,
बैठे हो ध्यान लगा, भगतों के मन डोले,
जग है, दीवाना तेरे नाम का, बाबा बिना ...।।३।।

डोरी तेरी भगती की, कहीं टूट नहीं जाये,
चहुं ओर अन्धेरा है, मन भटक नहीं जाये,
रास्ता, दिखाना शुभ काम का, बाबा बिना ...।।४।।

जीवन का भरोसा क्या, पल में मिट जायेगा,
'राजू' ये तन एक दिन, माटी बन जायेगा,
तन का, ठिकाना है ना चाम का, बाबा बिना ...।।५।।

ॐ श्री ॐ श्री बाबा गंगाराम ज्योति दर्शन ॐ श्री ॐ

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - मेंहदी रची थारे हाथों में ...)

झुंझनूं नगरी मं जावांगा, झोली भर कर ल्यावांगा,
अजी ऐसा है दातार म्हारा बाबाजी,
जो भी मन स ध्यावे है, सब संकट कट जावे है,
थारी लीला अपरम्पार म्हारा बाबाजी ।।टेर।।

नाम तिहारो, निशदिन रटतो, हर पल थारो ध्यान धरूँ,
थारै भरोसे बैठ्यो बाबा, और नहीं कोई आश करूँ,
महिमा थारी न्यारी है, शक्ति थारी भारी है,
अजी पायो ना कोई पार म्हारा, बाबाजी।।१।।

झूठी है या दुनियाँ सारी, मतलब का सब साथी है,
थारै दर्शन खातिर बाबा, अँखियाँ म्हारी प्यासी है,
दुनियाँ स मैं हार गयो, जद मैं थारै द्वार गयो,
थारी महिमा है अपार म्हारा, बाबाजी ।।२।।

भजन भाव म्हें कुछ नहीं जाणां, ना जाणां थारी माया न,
अब तो म्हाने दर्शन दे द्यो आयां हाँ थारै दर पे,
हाथ दया को फेर दियो, म्हारा दुखड़ा मेट दियो,
अब क्या म लगाओ बार म्हारा, बाबाजी ।।३।।

ॐ श्री ॐ श्री बाबा गंगाराम ज्योति दर्शन ॐ श्री ॐ

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - झिलमिल सितारों का आंगन होगा ...)

झुंझनूं जाके तुझे दर्शन होगा,
बाबा गंगाराम तेरे कष्ट हरेगा,
दर्शन करके तन मन तेरा निर्मल होगा...।।टेर।।

प्रेम से मंदिर में तू ज्योति जब जलाएगा,
लक्ष्मी के लाल गंगारामजी को ध्याएगा,
फूलों से भरा तेरा उपवन होगा... ।।१।।

शेरांवली मैया से तू शक्तिदान पाएगा,
सोना, चांदी हीरा मोती थाली भर लाएगा,
सुखी तू होगा शुद्ध तन मन होगा...।।२।।

सालासर वाला बाबा वीर बलकारी है,
कष्ट निवारी उपकारी दु:खहारी है,
भक्ति मिलेगी घर अन्न धन होगा... ।।३।।

पार्वती भोले शंकर, लक्ष्मीजी आवे है,
पांच देव मिल पंचदेवजी कुहावे हैं,
'हृदय' में सच्चा प्रेम जब होगा...।।४।।

ॐ श्री ॐ श्री बाबा गंगाराम ज्योति दर्शन ॐ श्री ॐ

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - पणिहारी...)

भक्तशिरोमणि आपकी जी म्हानै ओल्यूं आवै है,
नैना निहारे थारी बाट, आवोजी ।।टेर।।

फैल्यो प्रकाश चारूं ओर है जी, यो है भक्ति रो परताप-२,
धन-धन बाबा गंगाराम आवोजी।।भक्त शिरोमणि...।।१।।

चरणां मं बैठ्या टाबर टाबरीजी, देखो जाग्यो है बैराग-२,
दरशन को लाग्यो म्हानै चाव, आवोजी।।भक्त शिरोमणि...।।२।।

जग न दिखायो परताप है जी, थे तो दीन्हों आशीर्वाद-२,
भगतां लडावै थारो लाड, आवोजी ।।भक्त शिरोमणि...।।३।।

नीन्द न आवै रात नै जी, आख्यां भर-भर आवै है - २,
माला जपां म्हें दिन रात, आवोजी।। भक्त शिरोमणि...।।४।।

दरशन दीवानी थांकी लाडलीजी, छोरी 'उमा लहरी' -२,
पूजा को ल्याई हूँ मैं थाल, आवोजी।। भक्त शिरोमणि...।।५।।

।।श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन वन्दना।।

(तर्ज - राजपुत्र ...)

भक्त और भगवान का जग में युगों-युगों से नाता,
बिना भक्त भगवान ना कोई जग में पूजा जाता,
जै-जै गंगाराम जै-जै विष्णुनाम जै-जै झुंझनूं धाम, जै-जै गंगाराम।।

भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन, परम भक्त कहलाये,
पुण्योदय से परमपुरूष के पुत्र - रत्न बन आये,
विष्णु - पुत्र होने का गौरव परमयोग से पाये,
पिता-पुत्र की महिमा मुख से सहज न वरणी जाये,
ऐसी सेवा दुनिया में कोई विरला ही कर पाता ।।१।।

राम नाम आधार जगत में, हनुमत ने बतलाया,
मेरे तो गिरधर गोपाल, ये मीरा ने दोहराया,
नरसी ने जूनागढ़ मांही, सांवल वीर मनाया,
भक्त देवकी ने झुंझनूं में सत् का अलख जगाया,
बाबा गंगाराम के जैसा दूजा नजर न आता।।२।।

जो प्रत्यक्ष दीखे ना चाहिए उसको कोई प्रमाण,
चिता की अग्नि साक्षी है, साक्षी है वो स्थान,
गंगाजल मस्तक से निकला, मुदित हुये भगवान,
शव में फिर से शिव जागा, था विष्णु का वरदान,
वरना मृत शरीर कोई भी हाथ उठा ना पाता।।३।।

सम्भवामि युगे-युगे प्रगटे विष्णु अवतारी,
बाबा गंगाराम जगत में है करूणा की झारी,
धन्य हुई झुंझनूं की धरती धन्य हुए नर-नारी,
चमत्कार को नमस्कार करती है दुनिया सारी,
वो 'राजेन्द्र' हुआ जग में जो इनको शीश झुकाता।।४।।

।।श्री बाबा गंगाराम वन्दना।।

(तर्ज - धीरे - धीरे बोल कोई सुन न ...)

जय हो तेरी बाबा गंगाराम, दो शब्दों में भेद तमाम
गंगा तो पार उतारती, और राम संवारे बिगड़े काम

सुख सुविधा को छोड़ दिया जिसने, लोगों का उद्धार किया जिसने
छोड़ा वतन, छोड़ा जी धन,
त्यागा सुखमय संसार को, दुनिया के तामझाम को
जय हो....

लाखों की तकदीर संवारी है, अटकी नैया पार उतारी है
सच कह दूं मैं, भगतों तुम्हें,
किरपा जो न करते भक्तों पर, तो नहीं पूजता ये झुंझनूं धाम
जय हो....

देवकीनंदन को जो भक्ति दी, दे दो बाबा थोड़ी हमको भी
कर दो रहम, कर दो करम,
कहे दास बेखबर 'बागड़ा', करूं सुमिरन तेरा सुबहों शाम
जय हो....